630. प्रश्न—किसी चीज का गायब हो जाना असावधानी का परिणाम है कि पूर्वकर्म का?

उत्तर—हर घटना को पूर्व कर्मों से जोड़ना अच्छा नहीं। वर्तमान में मनुष्य को हर प्रकार से सावधान रहना चाहिए।

631. प्रश्न—मन अशांत रहता है इसलिए सिर भारी रहता है। मन कैसे शांत हो तथा मस्तिष्क कैसे स्वस्थ हो?

उत्तर—अज्ञान-वश मनुष्य अपने मन में नयी-नयी समस्याओं की रचना करता है और उन्हीं को लेकर रात-दिन अपने मन को उलझाये रखता है। मनुष्य अच्छी पुस्तकों के अध्ययन तथा संत-सज्जनों की संगत से अच्छी समझ प्राप्त कर विवेक द्वारा अपनी सारी भ्रमजनित समस्याओं का समाधान कर सकता है। जितना विवेक जगेगा, उतना मन शांत होगा और जितना मन शांत होगा, मस्तिष्क स्वस्थ होगा।

632. प्रश्न—मुझे पढ़ाई में तीव्र इच्छा है, परन्तु प्रयत्न करने पर भी इच्छित सफलता नहीं मिलती, क्या करें?

उत्तर—प्रयत्न करते चलो, सफलता मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसंयम एवं आत्मज्ञान मनुष्य को महान बना देते हैं।

633. प्रश्न—आप प्रवचन करते समय भी मौन-मुद्रा में क्यों प्रतीत होते हैं? वक्तव्य देते समय आप कभी भी क्रोध, दुख, उत्साह, करुणा आदि प्रकट करने के लिए हाथों, नेत्रों आदि का इशारा नहीं करते, ऐसा क्यों?

उत्तर—मैं यह सब प्रवक्ता के दोष समझता हूं। विशेषत: आध्यात्मिक प्रवक्ता को चाहिए कि वह स्थिर आसन से बैठकर या संयोग होने पर खड़ा होकर भी स्थिरतापूर्वक वक्तव्य दे। वह हाथ, पैर, सिर, आंख, मस्तक, कमर, धड़ किसी प्रकार भी चंचल न करे और न स्वर-व्यायाम करे। आध्यात्मिक प्रवक्ता की सारी बातों में गम्भीरता होनी चाहिए। वह प्रवचन के बीच-बीच में उद्‌बोधन तथा मनोरंजन के लिए उदाहरण एवं कहानी भी दे, तो उसमें भी संयम रखना चाहिए।

634. प्रश्न—'पूरा साहेब सेइये'—सद्‌गुरु कबीर के इस वचनानुसार पूरे साहेब की पहचान कैसे हो?

उत्तर—स्वरूपज्ञान और निष्काम अन्त:करण वाले महापुरुष ही पूरा साहेब हैं। साधु-संतों की संगत करो, खोज करो, धीरे-धीरे सब पता चल जायेगा।

635. प्रश्न—''बोली हमारी पूर्व की, हमें लखै नहिं कोय। हमको तो सोई लखै, जो धुर पूरब का होय॥'' (साखी 194) बीजक की इस साखी का अर्थ क्या है?

उत्तर—पूर्व कहते हैं जहां सूर्य उदित हो। अत: 'पूर्व' शब्द उजाला का प्रतीक है और उजाला का अर्थ है ज्ञान। अतएव तात्पर्य हुआ कि हमारी बात ज्ञानपरक है। इसे वही समझ सकता है जो ज्ञानपरक बुद्धि रखता है परन्तु जो केवल कर्मी उपासक होगा, वह हमारी बात नहीं समझ सकता।

इस साखी के 'पूर्व' शब्द का अर्थ बनारस लगाना बिलकुल भूल है। जैसे कि कुछ विद्वान अर्थ करते हैं—''कबीर जी कहते हैं कि हमारी बोली पूर्व की अर्थात बनारस की है। हमें दूसरा नहीं समझ सकता। हमारी बात वही समझेगा जो बनारस का होगा।''

भला बनारस पूर्व कैसे है? माना कि गुजरात तथा राजस्थान से बनारस पूर्व है, परन्तु बंगाल से तो पश्चिम है, नेपाल से दक्षिण तथा मद्रास से उत्तर है। दिशा देश-सापेक्ष होती है। अपने आप में वह कुछ नहीं। अतएव पहले वाला अर्थ ही ठीक है। यह ठीक है कि कबीर साहेब की असली वाणी वही है जो बनारस-गोरखपुर के बीच की भोजपुरी लटके में है। बीजक इसी तरह है।

636. प्रश्न—'जाका गुरु है आंधरा, चेला काह कराय। अन्धे-अन्धा पेलिया, दोऊ कूप पराय।' (साखी 154) बीजक की इस साखी में अन्धे गुरु तथा चेला किसे कहा गया है?

उत्तर—जो अविवेक और भौतिक स्वार्थ में लिप्त हों, वे गुरु तथा चेले अन्धे ही हैं।

637. प्रश्न—कर्मों का विधाता जीव है या मन? मन तो जड़ है। यदि जीव है, तो उसे अपने कर्मों की याद क्यों नहीं रहती?

उत्तर—जीव ही अपने कर्मों का विधाता है। जब वह कर्म करता है, तब जानकर ही करता है। पीछे से कर्म भूल जाये तो भी फर्क नहीं पड़ता। जो कर्म कर लिए गये हैं, उन्हें कर्मी जीव को देर-सबेर भोगना ही है।

638. प्रश्न—जिस इन्सान के मन में शांति न हो, उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर—जिनका मन शांत हो उनकी संगत करना चाहिए तथा ज्ञान के वचनों का मनन करना चाहिए।

639. प्रश्न—अस्थि-चर्ममय देह में प्रेम करने की अपेक्षा किसमें प्रेम करने से बन्धनों से मनुष्य छूट सकता है?

उत्तर—अपने अविनाशी चेतन स्वरूप में।

640. प्रश्न—सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का क्या अर्थ है?

उत्तर—नित्य, कल्याणरूप और पवित्र।

641. प्रश्न—क्या वैराग्य के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती?

उत्तर—इसमें भी कुछ संदेह है! राग ही जीव को विषयों में बांधता है। विषयों से विरक्त मन ही स्वरूपज्ञान एवं आत्मस्वरूप में स्थित होता है। चाहे गृहस्थी वेष में रहकर और चाहे विरक्त वेष में रहकर, अन्ततः, मन से पूर्ण विरक्त होना ही पड़ेगा, तभी मोक्ष सम्भव है। भोग-योग साथ-साथ सम्भव नहीं हैं। हां, कुछ ऐसे गुरु नामधारी अवश्य हैं जो सम्भोग में समाधि देखते हैं, परन्तु ऐसे लोगों के भ्रांत विचार को भूल ही जाना चाहिए।

मुक्ति विषय वैराग्य है, बन्धन विषय सनेह।
यह सद्ग्रन्थन को मता, मन माने सो करेह॥ (मणिमाला)

642. प्रश्न—विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर अपनी गीतांजलि में लिखते हैं 'वैराग्य-साधन से जिस मुक्ति की प्राप्ति होती है, वह हमारे लिए नहीं है। अनुराग के हजारों बन्धनों में ही मुझे मुक्ति के आनन्द का अनुभव होता है।' इसका अभिप्राय क्या है?

उत्तर—रवीन्द्रनाथ टैगोर गृहस्थ थे। वे वैराग्य के विषय में क्या कह सकते हैं? एक वकील डाक्टरी के विषय में, एक डाक्टर वकालत के विषय में, एक व्याकरणाचार्य इंजीनियरिंग के विषय में क्या घोषणा कर सकता है? यहां तक कि एक राष्ट्रपति साइकिल का पंचर भी कैसे बना सकता है बिना जाने? किसी विषय में सही घोषणा उसका अनुभवी ही कर सकता है।

643. प्रश्न—यदि किसी समयविशेष में सत्य बोलने की अपेक्षा झूठ बोलने से अपेक्षाकृत ज्यादा व्यक्ति लाभान्वित हो रहे हैं, तो क्या ऐसी परिस्थिति में झूठ बोलना चाहिए?

उत्तर—महाभारत में यह कहा गया है कि हर जगह केवल शब्दों की सत्यता ही पर्याप्त नहीं है। जिससे समाज का ज्यादा हित हो, वही सत्य है। परन्तु कब कैसी परिस्थिति में इसका उपयोग करना चाहिए इसकी पहले से घोषणा नहीं की जा सकती। यह बड़ा टेढ़ा प्रश्न है, इसका समाधान प्राप्त सन्दर्भ में ही करना चाहिए।

644. प्रश्न—वर्णव्यवस्था का आधार जन्म है या कर्म? यदि कर्म है तो द्रोणाचार्य ब्राह्मणकुल में पैदा होकर क्षत्रिय-कर्म किये। फिर भी उन्हें क्षत्रिय

नहीं कहा गया, क्यों?

उत्तर—द्रोणाचार्य को पूर्व ब्राह्मण नाम से लोग भले याद करते रहे हों, परन्तु वे वस्तुतः थे तो क्षत्रिय ही। धीवरीतनय व्यास, गणिकापुत्र वसिष्ठ, दासीपुत्र नारद, भंगिनिपुत्र पराशर, दासीपुत्र वाल्मीकि, लापता पिता के पुत्र सत्यकाम आदि अपने कर्म से ही ब्राह्मण, ब्रह्मर्षि आदि माने गये। आज के सन्दर्भ में तो वर्णव्यवस्था का कोई मूल्य नहीं है। जो जितना अच्छा कर्म करे, वह उतना ही उत्तम पुरुष है, फिर वह चाहे जिसके घर में पैदा हुआ हो।

* * *

645. प्रश्न—मोक्ष-प्राप्ति के लिए तीन मार्ग बताये जाते हैं—कर्म, ज्ञान और उपासना। इनमें सर्वश्रेष्ठ मार्ग कौन है?

उत्तर—तीनों की समान आवश्यकता है। मोक्ष ही क्या, साधारण वस्तु की उपलब्धि के लिए तीनों की आवश्यकता है। मान लो, रोटी पकाना है। इसके लिए ज्ञान चाहिए, फिर रोटी पकाने के लिए प्रेम होना चाहिए, यही यहां श्रद्धा या उपासना है और अन्त में कर्म की भी जरूरत है। रोटी बनाने की सब सामग्री इकट्ठी करके कार्य सम्पादन करना कर्म है। रोटी पकाने का ज्ञान न हो तो रोटी नहीं बन सकती। रोटी पकाने में श्रद्धा न हो तो भी वह ठीक से नहीं पक सकती तथा रोटी पकाने का कर्म न किया जाये, तो भी रोटी नहीं पक सकती। फिर मोक्ष के लिए क्या पूछना! उसके लिए कर्म, उपासना, ज्ञान तीनों की महती आवश्यकता है।

हमारे जीवन में तीन हिस्से हैं—इन्द्रियां, मस्तिष्क तथा हृदय। इन्द्रियां कर्म प्रधान, मस्तिष्क ज्ञान प्रधान तथा हृदय उपासना प्रधान है। पवित्र आचरण कर्म है, स्वरूपबोध ज्ञान है तथा स्वरूपबोध में निरन्तर अनुरक्ति उपासना है। तीनों के समुचित अवधारण से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

646. प्रश्न—वर्तमान समय में हो रहे धर्मपरिवर्तन आपकी दृष्टि में?

उत्तर—आजकल हरिजन एवं आदिवासी आये दिन इसाई तथा मुसलमान हो जाते हैं। कुछ हिन्दू धर्माचार्य या हिन्दू संस्थाएं कहती हैं कि यह राजनीतिक चाल है। परन्तु मेरे विचार से यह हिन्दू समाज की कमजोरी है। दूसरे को अछूत मानना ही हिन्दू समाज का सबसे बड़ा धर्म है। आचार के नाते नहीं, केवल जाति के नाते अमुक आदमी अछूत है, इस मूर्खतापूर्ण धारणा ने हिन्दू समाज को जर्जरित कर दिया है। फिर भी हिन्दू समाज के अहंकारी लोगों की आंखें नहीं खुलतीं। अभक्ष्य सेवी तथा कुकर्म में रत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, कुर्मी, मुराव, यादव आदि अछूत नहीं होते, किन्तु सदाचारी तथा भक्त हरिजन,

आदिवासी आदि अछूत माने जाते हैं। अतएव जाति के आधार पर माने गये छुआछूत का ढकोसला हिन्दू समाज से सर्वथा निकालकर ही उसका कल्याण होगा। वैसे गुरुदेव कबीर तो मानवमात्र के प्रति कहते हैं कि सब एक हैं।

647. प्रश्न—इन्द्रियां चेतन नहीं हैं, तो जीव का हुक्म कैसे मानती हैं?

उत्तर—इन्द्रियों को जीव को हुक्म देने की जरूरत भी नहीं है, प्रत्युत उन्हें अपने वश में रखना है। जैसे सूत्रधार कठपुतलियों को अपने वश में रखकर उन्हें अपने इच्छानुसार चलाता है, वैसे जीव को चाहिए कि इन्द्रियों को अपने वश में रखकर, उन्हें विवेक के अनुसार चलावे।

648. प्रश्न—मेढक को सर्प निगल रहा है। यदि मेढक पर दया करके सर्प को खदेड़ दूं, तो सर्प का आहार मारा जाता है तथा यदि उसे मेढक पकड़ने दूं, तो मेढक मारा जाता है। फिर क्या करूं?

उत्तर—सामने होती हुई हत्या यदि सम्भव हो तो बचाना अपना धर्म है। यदि सर्प से मेढक बचा लिया गया, तो ऐसी बात नहीं है कि सर्प बिना आहार के मर जायेगा।

649. प्रश्न—परिवार नियोजन के बाद उन्हीं मां के गर्भ में आने वाले बच्चे कहां जायेंगे?

उत्तर—उन्हीं मां के गर्भ में आने का कोई रिजर्वेशन नहीं है। कर्मानुसार जीव कहीं शरीर धारण करके अपने कर्म-फल-भोग भोगते रहेंगे। अधिक बच्चा पैदा करने की अपेक्षा यदि ब्रह्मचारी न बन सके, तो संतान-नियोजन करा लेना ठीक है। एक बच्चा से अधिक मत पैदा करो।

650. प्रश्न—कबीर साहेब सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते थे। आज उसके उलटा है क्यों?

उत्तर—कबीर साहेब सिद्धान्तहीन नहीं थे। सिद्धान्तहीन जीवन तो अस्त-व्यस्त होता है। हां, यह आप कह सकते हैं कि कबीर साहेब के कुछ अनुगामी कबीर साहेब के सिद्धान्त को न समझ पाते हों और समझ करके भी न आचरण कर पाते हों, तो अलग बात है। सभी अनुगामी अपने मूल आचार्य के पथ पर पूर्णतया कहां चल पाते हैं?

श्रीकृष्ण महाराज का गीतोपदेश कितना ऊंचा है, यह किसी से छिपा नहीं है। परन्तु श्रीकृष्ण महाराज के बच्चे और नाती-पोते शराब पी-पीकर और उद्दंडतापूर्वक युद्ध कर-करके अपना मूलत: विध्वंस कर लिए, यह आप महाभारत में पढ़ सकते हैं। कम-बेश सभी मतों की ऐसी बातें हैं। फिर कुछ

कबीरपंथी कबीर साहेब के आज्ञानुसार बिलकुल न चल पाते हों, इसमें क्या आश्चर्य है?

651. प्रश्न—कबीर साहेब काठ की माला में विश्वास नहीं करते हैं, परन्तु आज कबीरपंथ में वह अनिवार्य है, ऐसा क्यों?

उत्तर—कबीर साहेब ने कहा है कि माला पहनने मात्र से कल्याण नहीं होता है, इसके लिए सद्‌गुण धारण करने की आवश्यकता है। कबीर साहेब माला नहीं पहनते थे यह भी नहीं कहा जा सकता। उनके पुराने से पुराने चित्रों में, जिसे सरकार भी मानती है, माला है। फिर किसी पंथ एवं सम्प्रदाय का कोई चिह्न होता है। वैष्णव तथा कबीरपंथ में कण्ठी-माला दया का चिह्न माना जाता है। परन्तु वही सब कुछ नहीं माना जाता। सदाचरण-सद्‌गुण ही से कल्याण है।

652. प्रश्न—'सन्तो सहज समाधि भली' का अभिप्राय क्या है?

उत्तर—जीव का सहज स्वरूप है द्रष्टा, सब कुछ जानते रहना। अतएव जब विवेकपूर्वक अपने चेतन-स्वरूप से पृथक सारे जड़ दृश्यों को पृथक ही समझकर उनका साक्षी बने रहने का अभ्यास हो जाता है, तब यह सहज समाधि है। सहज-समाधि वही है, जिसमें कुछ आरोपित न करना हो। जैसा अपना स्वरूप है, वैसी दशा में रहना ही सहज समाधि है। व्यक्ति का अपना स्वरूप शुद्ध चेतन है और इसी प्रकार शुद्ध चेतन दशा में स्थित रहना ही सहज समाधि है।

653. प्रश्न—मनुष्य के मन पर किसी आकार-प्रकार रहित अदृश्य वस्तु विशेष का प्रभाव क्या सम्भव है?

उत्तर—शब्द, गंधादि अदृश्य हैं, परन्तु उनका प्रभाव मनुष्य के मन पर पड़ता ही है। अदृश्य काम, क्रोध, लोभ, भय, शील, क्षमा, वैराग्य आदि का प्रभाव भी स्पष्ट है। फिर दृश्य का प्रभाव तो होता ही है। इसलिए खराब दृश्यों से हटकर उन दृश्यों का ही सम्बन्ध रखना चाहिए जिनसे मन निर्मल हो।

654. प्रश्न—मन का शुद्ध दिशा में परिवर्तन होने का सर्वत्र वातावरण कब बनेगा? परिवार-नियोजन की भांति ही मन-नियोजन की कोई सरल प्रणाली या नुस्खा है? युग का नव-निर्माण कब होगा? जन साधारण सुख-शान्ति का श्वास कब लेंगे?

उत्तर—न कभी ऐसा समय भूतपूर्व में था न आज है और न आगे आयेगा कि संसार के सभी लोगों का मन एकदम शुद्ध रहा है या हो जायेगा। परिवार-

नियोजन की तरह मन-नियोजन का कोई सरल नुस्खा नहीं है। आज के कुछ तथाकथित अवतारों की सनक है कि थोड़े दिनों में सत्युग अर्थात पूर्णतया पवित्र समय आ जायेगा, जिसमें संसार के सभी लोग केवल सतोगुणी होंगे। यह सब संसार के साथ छलावा है या लोगों के लिए झूठा बढ़ावा है।

हां, दुनिया के महापुरुषों का सत्पुरुषार्थ निष्फल नहीं जाता है। उनके सत्प्रयत्न से संसार में निरन्तर सुधार होता है। यदि दुनिया में समय-समय से महापुरुष, संत पुरुष न होते रहें, तो दुनिया की दशा और बिगड़ जाये। जो चाहेगा उसका सुधार निश्चित होगा। सत्संगी, सदाचारी के लिए सदैव सत्युग है।

655. प्रश्न—नियति क्या है? नियति अपने दायरे में क्या समर्थ है? नियति के संचालन होने में भी कोई विकल्प है?

उत्तर—कारण-कार्य की अटूट व्यवस्था ही नियति है, जिसको ऋग्वेद में ऋत कहा गया है, और वह अपने दायरे में समर्थ है। किन्तु दायरे के बाहर कुछ नहीं कर सकती।

प्रष्टा पूछते हैं कि नियति के संचालन में भी कोई विकल्प है? क्या आप चाहते हैं कि नियति आपके इच्छानुसार चलने लगे? नियति के संचालन के लिए बाहर से सोचने की आवश्यकता ही नहीं है। नियति अपने आप चालित है। प्रकृति में अपने नियमों के अनुसार घटनाएं होंगी और प्राणियों में उनके कर्मों के अनुसार उन्हें सुख-दुख फल होंगे।

पानी बरसने की जड़-प्रकृति की अपनी जितनी योग्यताएं हैं, उनके इकट्ठी होने पर पानी बरसता है, न होने पर नहीं बरसता है। आदमी भूलवश हवन, प्रार्थना, उपवास और पूजा के बल पर पानी बरसाने का दुराग्रह करता है। यह सब एकदम बचकानापन है। पुराने संस्कृत ग्रन्थों में लिखा हो कि यज्ञ करने से पानी बरसा या हवनकुण्ठ में से रथ, अस्त्र-शस्त्र, योद्धा, नगर आदि निकले तो यह ब्राह्मणों द्वारा अपने यज्ञ-पेशे के मिथ्या प्रचार के अलावा और कुछ नहीं है। पहले जमाने में ज्यादा पानी बरसता था, क्योंकि पहले ज्यादा यज्ञ होता था—यह मानना एक अज्ञान है। वस्तुतः पहले जंगल ज्यादा था, इसलिए पानी ज्यादा बरसता था। आज भी जंगली क्षेत्र में पानी ज्यादा बरसता है। वर्षा के लिए हवन नहीं, किन्तु वृक्ष-वनस्पतियों के रोपण का विस्तार होना चाहिए। हर साल अरबों रुपये के घी-मेवे-अन्न यज्ञ के नाम पर फूंकने वाला भारत यज्ञहीन अमेरिका आदि से जब आये दिन अन्न मंगाकर खाता है, तब उसके हवन की पोलपट्टी और खुल जाती है। अतएव अधिक वर्षा, वातावरण की शुद्धि के लिए वृक्षारोपण कारण-कार्य व्यवस्था के भीतर है।

मनुष्य इच्छापूर्वक काम करता है, तो वह अपने भोलापन से यह सोचता है कि वर्षा, भूचाल, धूप, शीत आदि ब्राह्मांडिक क्रियाएं भी कोई आकाश में बैठा देवता अपनी इच्छा से करता है। वस्तुतः ब्रह्मांड की सारी क्रियाएं जड़ प्रकृति के स्वयंसिद्ध नियमों से निरन्तर होती हैं। उनको कोई देवता या चेतन नहीं करता है। इसीलिए अतिवर्षण, अवर्षण, भूचाल, पाला-ओला में अधिक धन-जन की हानि हो जाती है, क्योंकि सारी क्रियाएं निरी जड़-प्रकृति से होती हैं।

अतएव ब्रह्मांड की क्रियाओं का चेतन नियामक खोजना एक भ्रम है। हां, घट-घट में निवास करने वाले चेतन ज्ञान स्वरूप हैं।

656. प्रश्न—गज और ग्राह की कहानी कहां तक सत्य है?

उत्तर—एकदम काल्पनिक है। गज और प्रह्लाद को बचाने के लिए भगवान गरुड़ को छोड़कर दौड़ पड़े तथा खम्भा फाड़ डाले, परन्तु करीब एक हजार वर्षों से भारत में मुसलमान आकर अब तक करोड़ों गायें काटे होंगे, हजारों देवमंदिर तोड़े होंगे तथा लाखों साधु-ब्राह्मणों एवं हिन्दुओं का वध किये होंगे, परन्तु भगवान इतना चुप्पी साध लिए कि मानो वे हैं ही नहीं।

657. प्रश्न—धर्म और मोक्ष में क्या अन्तर है?

उत्तर—धर्म प्रकृति और मानसजगत के नियम हैं। इन्हें पहचानकर तदनुसार आचरण बनाना धर्माचरण है। यह मानसजगत का नियम है कि विषयों में लगने से मन में द्वन्द्व होंगे और विषयों से अपने आपको हटा लेने से मन निर्मल एवं निर्द्वन्द्व हो जायेगा। धर्माचरण का फल मोक्ष है। मोक्ष मन के क्लेशों से सर्वथा छूटकर शरीरांत में सदा के लिए शुद्ध चेतन मात्र रह जाना है।

658. प्रश्न—सब मत वाले भगवान-भगवान कहते हैं, परन्तु शास्त्रों में लिखित उचित-अनुचित बातों पर निष्पक्ष विचार क्यों नहीं करते?

उत्तर—इसमें अपने सम्प्रदाय का मोह, जड़ता, पूर्वग्रह, अविवेक एवं अनुदारता ही कारण है।

659. प्रश्न—कुछ संत कहते हैं 'नदिया एक घाट बहुतेरे' परन्तु हमें यह बात भ्रमपूर्ण लगती है?

उत्तर—'नदिया एक घाट बहुतेरे' यह वाक्य एक अंश में सत्य है सर्वांश में नहीं। मान लो, इलाहाबाद पहुंचना है, तो उत्तर से आने वाले फाफामऊ घाट से, पूर्व से आने वाले झूंसी घाट से तथा दक्षिणी से आने वाले नैनी घाट से

आयेंगे। इसी प्रकार स्वरूपविवेक तक पहुंचने के पहले जिस मत में जो व्यक्ति रहता है उसी के अनुसार उपासना एवं आचरण करता है, परन्तु उसकी यदि निष्पक्ष दृष्टि हो तो वह धीरे-धीरे सत्संग करके स्वरूपविवेक को प्राप्त हो जाता है और यह प्राप्त होने पर उसकी सही दशा आ जाती है। यदि नदिया एक घाट बहुतेरे का अर्थ कोई यह मान ले कि आदमी धर्म के नाम पर जो करता है चाहे विवेकपूर्वक और चाहे अविवेकपूर्वक, उससे ही सबका पूर्ण कल्याण हो जायेगा, तो यह गलत है।

660. प्रश्न—कुदरत और भगवान में क्या अन्तर है?

उत्तर—जड़ प्रकृति को कुदरत कहते हैं। इन्द्रियजित पुरुष ही भगवान है। आकाशीय भगवान एक कल्पना है।

661. प्रश्न—प्रारब्ध किस इन्सान पर प्रसन्न होता है?

उत्तर—प्रारब्ध कोई चेतन प्राणी नहीं है जो किसी पर प्रसन्न या नाखुश हो। प्रारब्ध एक कारण-कार्य व्यवस्था है। अच्छे कर्मों का अच्छा तथा बुरे कर्मों का बुरा प्रारब्ध अपने आप उसी प्रकार बन जाता है जैसे बीज से वृक्ष। अत: सदैव अच्छे कर्म करो।

* * *

662. प्रश्न—दीक्षा देते समय कोई गुरु जीवनोपयोगी शिक्षा देते हैं और कोई गुरु बाजा बजवाकर शिष्य के कान में धीरे से कोई मन्त्र देते हैं। अजरमणी, अमरमणी आदि पांच नाम मुझे गुरु ने सुनाया था, परन्तु उसका अर्थ मैं आज तक नहीं जानता। कृपया बतावें?

उत्तर—दीक्षा के समय जीवनोपयोगी शिक्षा देने की बड़ी आवश्यकता होती है। सब मत के गुरु कुछ-न-कुछ शिक्षा देते ही हैं। पारख सिद्धान्त में तो दीक्षा के समय शिक्षा ही विशेष दी जाती है। कुछ पवित्र भाव उत्पन्न करने वाले शब्दों का समूह रूप मन्त्र भी गुरुजन शिष्य को सुनाते हैं। उसकी भी आवश्यकता है। शिष्य को चाहिए कि गुरु के दिये हुए मन्त्र का स्मरण रखे तथा उसका अर्थ समझकर आचरण करे। अजरमणी, अमरमणी आदि नाम सब स्व-स्वरूप चेतन के विशेषण हैं। शिक्षा तो कोई भी सुन सकता है, परन्तु मन्त्र तो उसी को सुनाना चाहिए जो दीक्षा ले रहा है। अतएव मन्त्र की गोपनीयता भी ठीक ही है। तुम्हें अपने गुरु से मन्त्र का अर्थ समझना चाहिए।

663. प्रश्न—कहा जाता है संसारी जीव का शरीर छूटने पर वह प्राणवायु के सहित पुनर्जन्म को प्राप्त होता है और जीवन्मुक्त का शरीर छूटने पर उनके

प्राण प्रकृति में लीन हो जाते हैं और जीव मुक्त होकर अपने आप रह जाता है। परन्तु देखा जाता है संसारी तथा ज्ञानी दोनों के शरीर छूटने पर दोनों के प्राण लीन हो जाते हैं। तो वह प्राणवायु कौन पदार्थ है जिसके सहारे जीव पुनर्जन्म में जाता है?

उत्तर—नाक से फेफड़े तक चलने वाले स्थूल प्राण हैं। यह तो शरीरांत में सबके विलीन हो जाते हैं। जिनसे गमनागमन होता है, वे सूक्ष्म प्राण हैं। उसी को सूक्ष्म शरीर आदि कहते हैं। बोधवान का वही सूक्ष्म शरीर देहांत में नष्ट हो जाता है, जिससे उनकी पुनर्जन्म प्रक्रिया बन्द हो जाती है।

664. प्रश्न—आप काल्पनिक कथाओं का खण्डन करते हैं, परन्तु कुम्भ मेले को महत्त्व देते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर—मैंने यह कहीं नहीं लिखा और कहा है कि कुम्भ मेले में स्नान करने से पाप का क्षय होता है। कुम्भ मेला धार्मिकों का एक मेला है। उसमें सभी मत के संत-भक्त अपनी छावनी लगाते हैं। कबीरपंथी भी लगाते हैं। वहां नाना मत के लोगों को अपने विचार सुनाने तथा उनके विचार सुनने का अच्छा अवसर रहता है। इस अवसर से सबको लाभ लेना चाहिए।

665. प्रश्न—जीव पारख में कैसे ठहरता है?

उत्तर—पारख का अर्थ है ज्ञान। जहां से सबका ज्ञान होता है वह अपना चेतन स्वरूप है। अत: अपने आप में स्थित होना ही, जीव का पारख में स्थित होना है।

666. प्रश्न—सतोगुण जीव को बन्धन कैसे?

उत्तर—यदि सद्‌गुणों का अहंकार हो तो वे अवश्य बन्धन बन जाते हैं।

667. प्रश्न—शरीर से निकलते समय जीव दिखाई क्यों नहीं देता या किसी प्रकार का उसका आभास क्यों नहीं होता?

उत्तर—क्योंकि जीव पांचों विषयों से परे होने से वह पांचों ज्ञान-इन्द्रियों में नहीं आता।

668. प्रश्न—कोई अनुचित ढंग से धनार्जन करके फिर उसको परोपकार में लगाता है, तो उसे पाप होगा या नहीं?

उत्तर—परोपकार न करना बुरा नहीं, पर-अपकार करना बुरा है। गलत ढंग से धन कमा कर परोपकार करना कोई अर्थ नहीं रखता।

669. प्रश्न—क्या संस्कारों का प्रभाव हमारे कार्यों पर पड़ता है?

उत्तर—हमारे मन के संस्कार हमारी समस्त छोटी-बड़ी क्रियाओं पर पड़ते हैं। संस्कार जैसा कर्म वैसा।

670. प्रश्न—क्या ऐसा कोई उपाय है कि कर्म-संस्कारों का फल न भोगना पड़े या उन्हें कम किया जा सके?

उत्तर—जिन कर्मों को हम जीवन में नहीं दोहराते, उनके संस्कार क्षीण हो जाते हैं। स्वरूपज्ञानपूर्वक जो व्यक्ति पूर्ण अनासक्त हो जाता है, वह इसी जीवन में जीवन्मुक्त हो जाता है। जीवन्मुक्त ही शरीरपात-पश्चात विदेहमुक्त है। जो सबसे पूर्ण अनासक्त नहीं हो पाया, वह पुनर्जन्म को प्राप्त होता है। पुनर्जन्म में पहले जन्मों के कर्मों में से जिसकी योग्यता पड़ती है फल प्राप्त होते हैं। जीव जब तक आवागमन के चक्कर में है, उसे अपने किये हुए कर्मों के फल मिलते रहेंगे। परन्तु जो इस जीवन में जिन कर्मों को बुरा समझकर उनके प्रति राग छोड़ देता है और पुन: उन्हें नहीं दोहराता, उसके उन कर्मों के संस्कार कल्याण-साधना में बाधा नहीं दे पाते। अत: मनुष्य से कितने ही गलत कर्म हो गये हों, यदि वह आज उन्हें क्रमश: सर्वथा त्यागकर पूर्ण निर्दोष जीवन बना ले, तो आज ही स्वरूपस्थिति प्राप्त कर सकता है या आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर क्रमश: आज या आगे जन्मों में बढ़ता जा सकता है। सारांश यह है कि अपने किये हुए शुभाशुभ कर्म जब तक जीव देह धरता रहेगा प्रारब्ध भोग में सुख-दुख देते रहेंगे, परन्तु यदि कोई आध्यात्मिक मार्ग में चलकर चित्त को शुद्ध करता है, तो उसकी आध्यात्मिक उन्नति अवश्य होती है।

671. प्रश्न—कहते हैं वैराग्य से मोक्ष है, परन्तु भोजन, वस्त्र, निवास आदि लेने ही पड़ते हैं, तो राग कैसे मिटेगा?

उत्तर—राग छोड़ करके भी भोजन, वस्त्र, निवास आदि ग्रहण कर सकते हो, जैसे औषध।

672. प्रश्न—आयु की पूरी निर्धारित अवधि होती है या संयम-नियम से रहकर आयु बढ़ायी जा सकती है?

उत्तर—कर्म प्रारब्धानुसार आयु की एक निश्चित अवधि होती है; परन्तु संयम-नियम तो अत्यन्त सुखदायी हैं, उनका पालन करना चाहिए।

673. प्रश्न—स्वरूप की जानकारी तथा स्वरूप की स्थिति में क्या अन्तर है?

उत्तर—केवल समझ लेना जानकारी है और समझ के अनुसार ठहर जाना स्थिति है।

674. प्रश्न—इस नाशवान संसार में रहने का अच्छा तरीका क्या है?

उत्तर—सबसे ममता त्यागकर तथा राग-द्वेष से मुक्त होकर जीना।

675. प्रश्न—प्रारब्ध भोग अचानक आ जाता है। यदि पहले से पता होता तो कुछ उपाय कर लिया जाता। पहले से क्यों पता नहीं होता?

उत्तर—प्रारब्ध क्या है, पहले से पता नहीं हो सकता, अत: उसके लिए मत सोचिये। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि मानसिक विकार तो पहले से मालूम हो जाते हैं, इनको मिटाने का उपाय कीजिए। जहां सोचने से काम बने, वहीं सोचना चाहिए।

676. प्रश्न—स्वरूपस्थिति कैसे प्राप्त हो?

उत्तर—चारों तरफ से मन के राग छोड़ दो। हलका भोजन लो। भोजन सात्विक हो। चिंता-फिक्र दूर कर दो। नित्य एकांत में बैठकर सोचो "मैं शरीर, इन्द्रिय, मन तथा सारे दृश्यों से सर्वथा पृथक शुद्ध चेतन हूं, असंग, निराधार तथा कल्याणरूप हूं।"

इस अभ्यास के बाद कुछ दिनों में काफी अनासक्ति की अवस्था आयेगी। फिर एकांत में बैठकर सारे शुभाशुभ संकल्पों को छोड़-छोड़कर अपने आप शांत रहो। अपनी सत्ता अपनी ओर लौटाते रहो। मन को बल न दो। फिर संकल्पों का अन्त होकर स्वरूपस्थ हो रहोगे।

677. प्रश्न—गृहस्थी में रहकर मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो?

उत्तर—विषयासक्ति के त्याग से स्वरूपस्थिति होती है। विषय अनेक हैं। उनमें कामवासना बलवान है। चाहे काम-वासना हो और चाहे सम्मान की वासना हो, सबका त्याग करना है। वासना के त्याग से ही मोक्ष की सिद्धि है। किन्तु बिना भोगों के त्याग किये वासना का त्याग नहीं होगा। अत: भोग-क्रिया और वासनाओं के सर्वथा त्याग से ही मोक्ष होगा। इसके लिए साधु संगत की बड़ी आवश्यकता है।

678. प्रश्न—अपने सम्प्रदाय के मद में अन्धा आदमी जो अपने सम्प्रदाय की प्रशंसा तथा दूसरे सम्प्रदाय की निन्दा करता है, कल्याण को प्राप्त कर सकता है?

उत्तर—कल्याण-प्राप्ति का यह रास्ता ही नहीं है। चाहे कबीरपंथी हो या वैष्णव, वेदांती हो या आर्यसमाजी या अन्य सम्प्रदाय का व्यक्ति, मान और मद का त्याग करके ही कल्याण दशा आ सकती है। यदि हमारी बात सत्य है, तो उसके मद की आवश्यकता नहीं है, किन्तु उसके आचरण की आवश्यकता है। आदमी जितना ही सत्य के निकट पहुंचता जायेगा, उतना विनम्र होता जायेगा।

679. प्रश्न—समुद्र का जल खारा क्यों है?

उत्तर—नदियों के जल द्वारा क्षार पदार्थ निरन्तर समुद्र में गिरता है। समुद्र का पानी तो भाप बनकर उड़ता रहता है, परन्तु उसमें इकट्ठा होता हुआ क्षार पदार्थ नहीं उड़ता, इसलिए।

680. प्रश्न—बीजक में साधु, सन्त, सद्गुरु, महंत नाम तो आये हैं, किन्तु आचार्य शब्द नहीं आता है, तो आचार्य की पदवी मानी जाये कि नहीं?

उत्तर—बीजक तथा कबीरपंथ के किसी भी पुराने ग्रंथ में आचार्य शब्द नहीं है, परन्तु ज्ञान और आचार की शिक्षा देने वाले को आचार्य कहा जा सकता है। जो जिसको शिक्षा दे, वह उसका आचार्य है। कबीरपंथ में तथा उसके महान ग्रन्थ बीजक, पंचग्रंथी, निर्णयसार, निष्पक्ष सत्यज्ञान दर्शन आदि में साधु, सन्त एवं सदगुरु पद का ही वर्णन है, आचार्य पद का नहीं। विद्वानों ने माना है—"जो शास्त्रों का चयन एवं उनके तात्पर्य का निर्णय करते हैं, सज्जनों को सदाचार में लगाते हैं और स्वयं सदाचार का पालन करते हैं, वे आचार्य हैं।"[1]

* * *

681. प्रश्न—मुक्ति क्या है, उसका प्रमाण क्या है?

उत्तर—मन का स्ववश होना मुक्ति है। इसका प्रमाण स्वयं का अनुभव है। स्वयं मुक्त हुए बिना मुक्ति का प्रमाण नहीं मिल सकता। जो देह में रहते-रहते स्ववश मन वाला है, वही जीवन्मुक्त है। जीवन्मुक्ति अनुभव का विषय है। विदेमुक्ति उसका फल है। जीवन्मुक्ति के लिए पुरुषार्थ करो। विदेहमुक्ति अपने आप होगी।

682. प्रश्न—सत्य का क्या अर्थ है?

उत्तर—जो सदैव रहता हो। जड़ और चेतन—दोनों नित्य हैं, अतः दोनों सत्य हैं। चेतन मेरा स्वयं स्वरूप है, अतः वह परम सत्य है।

683. प्रश्न—चित् का अर्थ क्या है?

उत्तर—चेतन। दूसरे अर्थ में मन की अवस्था विशेष भी है।

684. प्रश्न—बीजक में पारख शब्द की आवृत्ति बहुत कम है। इस शब्द का उद्भव और विकास कब से?

---

1. **आचिनोति च शास्त्राणि आचारेस्थापयत्यपि।**
   स्वयमाचरते यस्तु तमाचार्यं प्रचक्षते॥

उत्तर—बीजक में पारख शब्द का प्रयोग जितना है, काफी है। यह शब्द बीजक के सिद्धांत की रीढ़ है। बीजक में पारख शब्द जहां आया है, प्रबल सिद्धांत पक्ष है। इसके उद्‌भव के मुख्य स्रोत सद्‌गुरु कबीर स्वयं हैं। विकास उनकी परम्परा में कबीरपंथ भर में होता रहा। इस विषय को समझने के लिए 'कबीर दर्शन' पढ़ें।

685. प्रश्न—पंचतत्त्वों में आकाश अमान्य क्यों?

उत्तर—आकाश शून्य है। संज्ञा मात्र है। उसमें न परमाणु हैं, अत: न क्रिया। इसलिए उसका कुछ परिणाम नहीं। जिसमें कोई परिणाम नहीं, वह तत्त्व कहां है! हां, यदि उसे संज्ञा मात्र तत्त्व कहा जाये तो कोई हर्ज नहीं।

686. प्रश्न—बीजक की रचना तथा नामकरण किसके द्वारा हुए?

उत्तर—बीजक के पद्य सद्‌गुरु कबीर के हृदय से निकले हैं। उसका नामकरण भी उन्होंने ही किया है। 37वीं रमैनी में लिखा है—

बीजक बित्त बतावै, जो बित गुप्ता होय।
ऐसे शब्द बतावै जीव को, बूझै बिरला कोय॥

687. प्रश्न—ब्रह्मज्ञानी को कुछ भान नहीं रहता है ऐसा कहते हैं, क्या सच है

उत्तर—जब तक शरीर है, भान सब कुछ होगा। विवेकवान विषयासक्ति से निवृत्त होते हैं, यही उनका महत्त्व है।

688. प्रश्न—तुलसीदास जी ने अपने रामचरित मानस में भ्रष्ट ब्राह्मणों को भी पूजने को कहा है, फिर उनके समय में काशी के पण्डित उनका विरोध क्यों किये?

उत्तर—गोस्वामी तुलसीदास जी ने वाल्मीकि जी की रामायण का आधार बहुत थोड़ा लिया है और अपनी स्वतन्त्र कल्पना ज्यादा की है। गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में अनेक सदुपदेश की बातें बताते हुए तथा रामपक्ष के पात्रों को सुधारते हुए तथ्यों को तोड़ा-मरोड़ा ज्यादा है। इसलिए उन पर काशी के पंडित नाखुश हुए थे।

689. प्रश्न—सुख क्या पदार्थ है?

उत्तर—मन की प्रसन्नता।

690. प्रश्न—दिल एक मन्दिर है, तो लोग बाहरी मन्दिर क्यों जाते हैं?

उत्तर—सबको इतना बोध कहां है।

691. प्रश्न—कौन-सी भूख सबसे तेज है?

उत्तर—पेट की भूख सबसे तेज है, वैसे जब जो लग जाये।

692. प्रश्न—सामने किसी का अमानवीय कार्य देखकर उसका विरोध करना चाहिए या चुप रहना चाहिए।

उत्तर—इसके लिए देश और काल का ज्ञान रखना पड़ेगा। सभी देश और काल में एक ही जैसी प्रतिक्रिया नहीं करते बनेगी।

693. प्रश्न—मुसलमान लोग क्यों सब काम हिन्दू से उलटा करते हैं?

उत्तर—मूलरूप से हिन्दू और मुसलमान दो भिन्न परम्पराएं भिन्न देश और काल में पैदा हुई हैं और दोनों अपनी-अपनी जगह पर ठीक हैं तथा दोनों में जो अपनी गलतियां हैं सुधारनी चाहिए। ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं हैं। भ्रमवश विरोधी लगती हैं। जहां जान-बूझकर कुछ विरोधी बातें की जाती हैं, उसका मूल सांप्रदायिकता है। यह केवल हिन्दू और मुसलमानों में नहीं, संन्यासी नारियल के कमण्डलु को पवित्र मानते हैं, परन्तु वैष्णव उसे पंगत में नहीं ले जाने देते, जबकि वे स्वयं सड़ने वाली लौकी के कमण्डलु पवित्र मानते हैं। जबकि नारियल का कमण्डलु पानी में साल भर डाले रहो तो भी नहीं सड़ेगा।

694. प्रश्न—इस नाम-रूपात्मक दृश्य जड़ सृष्टि में कोई अव्यक्त शक्ति अवश्य है जिससे सृष्टि का नियमन होता है। इसमें आपका क्या विचार है?

उत्तर—तत्त्वों के गुण-धर्म ही उनकी शक्ति है और उसी से सृष्टि का निरन्तर नियन्त्रण चलता है। सत्ता नित्य है और सत्ता में उसकी अपनी शक्ति भी नित्य है। इससे उसकी व्यवस्था भी नित्य है जो स्वाभाविक है। कोई इसमें इच्छाशक्ति नहीं। इच्छाशक्ति जीव में है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी इच्छा को पहचाने तथा उसका परिमार्जन करके कल्याण करे।

695. प्रश्न—पूर्ण सतर्कता रखते हुए भी दुर्घटना हो जाती है। क्या कारण है?

उत्तर—इसी को हम लोग पूर्वजन्म के अपने बनाये हुए कर्मों के फल (प्रारब्ध) कहते हैं।

696. प्रश्न—मृत्यु क्या है?

उत्तर—जीव और देह का वियोग।

697. प्रश्न—मृत्यु के समय क्या सचमुच जीव को लेने यमराज आते हैं?

उत्तर—वासना ही यमराज है जो जीव के साथ में है। बाहर से कोई यमराज नहीं आता।

698. प्रश्न—क्या संतकाव्य निराशावादी है?

उत्तर—जीवन से हताश करने की भावना निराशावादी होती है। संतकाव्य तो नये जीवन का श्वास फूंकता है। संतकाव्य नैतिकता के धरातल पर उपजता है जो जीवन का प्राणतत्त्व है।

699. प्रश्न—क्या संतकाव्य वैराग्य उत्पन्न कर अकर्मण्य बनाता है?

उत्तर—स्वाधीनता जीवन का चरम सुख एवं परम उपलब्धि है। जिसके जीवन में जितने अंशों में वैराग्य होगा, वह उतने अंशों में स्ववश एवं स्वाधीन होगा। दुनिया के वैराग्यवान पुरुष अकर्मण्य नहीं, आजीवन निरन्तर कर्मतत्पर रहे। उदाहरण के लिए बुद्ध, महावीर, ईसा, शंकराचार्य, कबीर, नानक, दयानन्द, विवेकानन्द आदि को ले सकते हैं।

700. प्रश्न—सुख-सौंदर्य का उपभोग क्यों न करें? क्यों उसकी नश्वरता की चिंता में घुलकर मरें?

उत्तर—सौन्दर्य नश्वर है। उसके उपभोग के परिणाम में वासना की वृद्धि है और वासना ही बेचैनी का मुख्य कारण है। सौन्दर्य की विनश्वरता को जो समझता है वह घुल-घुलकर नहीं मरता है। वह तो स्ववश जीवन जीते हुए सच्चे अर्थ में सुखी रहता है। घुल-घुलकर तो वह मरता है जो नश्वर चाम के मोह में आसक्त है।

701. प्रश्न—नवजात शिशु सुप्तावस्था में हंसता, रोता और आंखें उलटकर क्यों देखता है?

उत्तर—वह सुप्तावस्था में नहीं, किन्तु जाग्रत में ही हंसता, रोता तथा आंखें उलटकर देखता है। नवजात शिशु सोता अधिक है। जितने समय वह जागता है, वह भी सोये के समान लगता है। वस्तुत: उस अनुभवहीन शिशु का रोना, हंसना आदि पूर्वजन्मों के संस्कारों के बल से होते हैं।

702. प्रश्न—मनोविज्ञान क्या है? क्या मन्त्र के सहारे ब्रह्मांड में भटकती आत्मा को वश में किया जा सकता है?

उत्तर—मन को सम्पूर्ण रूप से जानना मनोविज्ञान है। मन्त्र के सहारे भटकती आत्माओं से सम्बन्ध साधने की बात धूर्तों का जाल है।

703. प्रश्न—क्या संजीवनी विद्या सत्य है? कहते हैं शुक्राचार्य इसके ज्ञाता थे। तो अपनी पत्नी को क्यों नहीं जिला लिये?

उत्तर—ऐसी कोई विद्या नहीं है कि किसी मनुष्य को अमर बनाया जा सके या मरे हुए को जिला ले। समाज के चालाक लोग जो समाज को मूर्ख बनाते हैं, वे ही कुछ ऐसी सनसनीखेज बातें कहते रहते हैं।

704. प्रश्न—हनुमान जी बिना पुल तथा नाव के समुद्र कूद गये। तो उनकी महिमा पर विश्वास करके किसी सिद्धि के लिए क्यों न उसकी पूजा की जाये?

उत्तर—यदि हनुमान जी का समुद्र लांघना ऐतिहासिक है तो यही हो सकता है कि उस समय जो भारत और लंका से व्यापारी-जहाजें चलते थे, उनमें से किसी पर बैठकर हनुमान जी लंका गये होंगे। इसी प्रकार डॉ० रांगेय राघव ने महायात्रा गाथा में स्वीकारा भी है। समुद्र कोई कूद नहीं सकता।

कई जगह हनुमान जी की आंखों में लगे रत्न चोरों द्वारा निकाल लिये गये। हनुमान जी की मूर्तियां चुरा ली गयीं। कई हनुमान-मन्दिर में तथा आस-पास होते हुए अत्याचार निरापद चलते हैं। जब हनुमान जी यह सब नहीं सुधार सकते तब उनकी पूजा करने से सिद्धि मिलेगी यह महाभ्रम है। मनुष्य को नैतिक और कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए। अपने मन को एकाग्र करने के लिए कोई किसी प्रकार पूजा-उपासना करे, तो यह एक अलग बात है और इन सबका साधक के लिए महत्त्व है।

705. प्रश्न—कुछ कबीरपंथी लोग कबीर साहेब को मानव कहने में बहुत डरते हैं। वे कबीर साहेब को अलौकिक सिद्ध करना चाहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर—इस दिशा में प्राय: हर सम्प्रदाय कमजोर है। वह अपने इष्ट को मानव से पृथक सिद्ध करना चाहता है। परन्तु मानव से बढ़कर कोई नहीं है।

706. प्रश्न—कबीर तथा कबीरपंथ का प्रामाणिक ग्रन्थ और सिद्धान्त क्या है?

उत्तर—बीजक कबीर देव की प्रामाणिक रचना तथा कबीरपंथ का वेद है। शुद्ध मानवता और स्वरूपज्ञान की स्थिति उसका सिद्धान्त है।

* * *

707. प्रश्न—शम और दम किसे कहते हैं?

उत्तर—मन का वश में आ जाना शम है तथा इन्द्रियों का वश में आ जाना दम है।

708. प्रश्न—साखीग्रन्थ में कुछ साखियां हैं जिनमें साधुओं को अपने हाथों भोजन बनाने का तीव्र निषेध है। इसे क्या मानें?

उत्तर—उक्त साखियां निश्चित ही कबीर साहेब की नहीं हैं, किन्तु किसी अदूरदर्शी संकुचित दिल वाले ने लिखकर वहां घुसेड़ दी हैं। उसी ग्रंथ में आचारी की अपेक्षा विचारी को श्रेष्ठ माना गया है।

709. प्रश्न—लहसुन-प्याज से वैद्यक की दृष्टि से अनेक रोग नष्ट हो सकते हैं, संतजन इन्हें खाने से क्यों वर्जित करते हैं?

उत्तर—ये उत्तेजक होते हैं। इसलिए ब्रह्मचर्य को नुकसान पहुंचाते हैं। दूसरे दुर्गन्ध भी पैदा करते हैं। इसलिए साधक को लहसुन-प्याज नहीं खाना चाहिए।

710. प्रश्न—क्या साकट का संसर्ग नहीं करना चाहिए? तो दीन, जो साकट हैं उनकी सेवा कैसे करें?

उत्तर—दीन की सेवा करना चाहिए। साकट का अर्थ है कुसंग प्रेमी, इनसे बचना चाहिए। अन्यथा अपने में दोष आयेंगे।

711. प्रश्न—क्या मन्त्रशक्ति सच है? मन्त्र से झाड़ने से बिच्छू-सांप के विष उतरते हैं तथा मन्त्र से अन्य अद्‌भुत काम देखे जाते हैं, क्या मानें?

उत्तर—मन्त्र कहते हैं राय, सम्मति तथा सलाह को। मन्त्र से सांप-बिच्छू के जहर नहीं उतरते। जहां मन्त्र से जहर उतरता दिखे, समझना चाहिए कि वे सांप-बिच्छू जहरीले नहीं थे या मन्त्र का दिखावा करके झाड़ने वाले ने किसी दवाई का प्रयोग किया है। जहर द्रव्य है, जो रक्त में घुल जाता है। वह छू करने से नहीं दूर होगा।

मन्त्र से कुछ का कुछ बना देना, यह सब जालसाजी है। ऋषि-मुनियों के नाम लेकर लोगों को बेवकूफ बनाना चतुरों का घिनौना काम है। 'कबीर दर्शन' तथा 'बीजक व्याख्या' पढ़ो। समाधान हो जायेगा।

712. प्रश्न—कबीरपंथ में ऐसी शाखाएं भी हैं जो पूरा पौराणिक हैं। वे पानपरवाना देकर जीव को सतलोक भेजती हैं, नाना अन्धविश्वास पैदा करती हैं। वे कबीर साहेब के क्रांतिकारी विचार क्यों नहीं समझतीं?

उत्तर—संसार में अनेक प्रकार के संस्कारी जीव हैं। सबके विचार एक नहीं हो सकते। स्वयं सत्य की खोज करो। सत्य में स्थित होओ। दूसरे लोग भी जितना समझ सकेंगे उतना ग्रहण करेंगे। जो अन्धविश्वास में हैं उनको भी हम प्रेम के बल पर ही कुछ समझा सकते हैं। उस पर भी समझना न समझना उनके ऊपर ही है।

713. प्रश्न—पिण्ड कांचा मन्त्र सांचा क्या सच है?

उत्तर—पिण्ड (देह) तो अवश्य कांचा है यानि नाशवान है, परन्तु मन्त्र तो महा झूठ है। मन्त्र वंचकों का जाल है जिससे वे दुनिया को ठगते हैं। हां, सत्योपदेश रूपी मन्त्र ठीक है।

714. प्रश्न—शिक्षक सद्गुरु यदि राग-द्वेष में दग्ध हो, तो शिष्य अपना कल्याण कैसे करे?

उत्तर—गुरुपद एक देह में सीमित नहीं है। राग-द्वेष-पूर्ण गुरु से हटकर पवित्र गुरु एवं संत जन का आधार लेना चाहिए।

जेहि विधि काज जीव को होई। लाज मिटाय करे पुनि सोई॥

715. प्रश्न—माया को मिथ्या जानकर भी उससे हम क्यों नहीं हट पाते?

उत्तर—क्योंकि मोह प्रबल है। विषयों की आसक्ति तथा गंदी आदतें अनादि की हैं। जब माया से छूटने के लिए अखंड पुरुषार्थ किया जायेगा, तब जीव छूट भी जायेगा। ऐसा ख्याल आना इसकी शुरुआत है। यदि मन में बारम्बार बन्धनों से छूटने का भाव जगने लगे, तो धीरे-धीरे निश्चित ही उधर प्रगति होगी।

716. प्रश्न—आज के दूषित वातावरण में जहां सांस लेना दूभर हो गया है, वहां सच्चे सद्गुरु तथा सत्संग की प्राप्ति का सरल रास्ता क्या है?

उत्तर—सभी समय में अच्छाइयां-बुराइयां रही हैं। वर्तमान से असंतुष्ट रहना मनुष्य का स्वभाव-दोष है। लोगों की यह धारणा है कि पहले सब अच्छा था, आज बुरा है तथा आगे और बुरा आयेगा। परन्तु यह भ्रम है। दूध का धोया कोई युग नहीं था।

पहले आप अपने घर को देव मन्दिर तथा घर के सदस्यों को देवी-देवता समझें। फिर जो मिलें सब को देव रूप में देखें। मनुष्य से गलती होती है, दीवार से नहीं। परन्तु मनुष्य ही देवता है, आकाश तथा पत्थर में देवता नहीं है। अपना मन पवित्र बनाओ, सर्वत्र पवित्रता दिखेगी।

आज भी विवेक-वैराग्य सम्पन्न सच्चे सद्गुरु तथा संत हैं। जब उनके लिए सच्ची चाह होगी, तब वे भी मिल जायेंगे। आज भी संसार में शुद्ध सदाचारी, परोपकारी, निर्मल मन वाले तथा जीवन्मुक्त पुरुष हैं।

आज के युग में भी हम संत्सग, सद्ग्रन्थ तथा गुरु उपासनापूर्वक साधना करते हुए कृतार्थ हो सकते हैं। परमपद हमारा अविनाशी स्वरूप ही है। बस, उधर ध्यान देने तथा रहनी में रहने की देरी है।

717. प्रश्न—क्या केवल संकल्पों पर स्ववशता हो जाने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है?

उत्तर—संकल्पों पर स्ववशता स्वरूपबोध का व्यावहारिक पक्ष है। पहले स्वरूपबोध प्राप्त करना जरूरी है। स्वरूपबोधपूर्वक संकल्पों पर पूर्ण स्ववशता ही तो जीवन्मुक्ति है।

718. प्रश्न—क्या गौतम ऋषि के शाप से अहल्या पत्थर हो गयी थीं और रामचन्द्र जी के पैर के स्पर्श होते ही पुनः जीवित हो उठीं? यदि हां, तो कैसे?

उत्तर—वैदिक साहित्य शतपथ ब्राह्मण में अहल्या की चर्चा है। वहां इन्द्र को अहल्याजार कहा गया है। अहल्या को वैदिक साहित्य में रूपक मात्र माना गया है। अहल्या वह जमीन है जिसमें हल न चलाया गया हो। इन्द्र वर्षा का अधिष्ठाता देवता है। अतः दोनों का सम्बन्ध अर्थात वर्षा तथा जमीन का नाता स्वाभाविक है। दूसरे ढंग से अहल्या का अर्थ अन्धकार है। 'अह' दिन है, उसका लीन होना 'अहल्या' है। इन्द्र का अर्थ सूर्य है। सूर्य अन्धकार को पतित करता है, यही इन्द्र का अहल्या को पतित करना है।

वैदिक भाषा में जिसको रूपक माना गया है, पुराणों में उसे कथा का रूप दिया गया है। पीछे के साहित्य में अहल्या की कथा का पर्याप्त विकास हुआ है।

पहले पहल महाभारत में अहल्या को नारी का रूप दिया गया और बताया गया कि इन्द्र गौतम का रूप धारणकर अहल्या को छलने आया और अहल्या उसके छल को बिलकुल न समझ सकी तथा छली गयी। महाभारत में अहल्या का उद्धार राम से नहीं कराया गया है।

वाल्मीकीय रामायण के बालकांड के सर्ग 48 में अहल्या की कथा रखी गयी है जो पीछे की रचना है। इन्द्र गौतम का रूप बनाकर अहल्या के पास उसे छलने आता है। अहल्या इन्द्र को पहचान लेती है, परन्तु खुश होती है कि मुझे इन्द्र चाहता है। अहल्या इन्द्र को स्वीकारती है। इन्द्र जब जाने लगा, तब अहल्या के पति गौतम आते हैं। वे इन्द्र को शाप देते हैं कि तेरा अंडकोष गिर जाये। फलतः इन्द्र अंडकोष रहित हो जाता है। इन्द्र के निवेदन करने पर देवताओं ने भेड़ा का अंडकोष उखाड़कर इन्द्र में लगा दिया।

गौतम अहल्या को भी शाप देते हैं कि तू यहां कई हजार वर्षों तक केवल हवा पीकर तप करेगी और सभी प्राणियों से अदृश्य रहकर राख में पड़ी रहेगी। जब श्री रामचन्द्र यहां आयेंगे, तब तू उनका सत्कार करेगी और विकार रहित होकर पुनः मेरे पास रहने लगेगी। कई हजार वर्षों तक केवल हवा पीकर तप करना—अतिशयोक्ति है।

श्री राम लक्ष्मण के सहित विश्वामित्र के साथ जब जनकपुर गये हैं, अहल्या के आश्रम में जाकर राम-लक्ष्मण—दोनों अहल्या के दोनों चरणों का

स्पर्श करते हैं। राघवौ तु तदा तस्या: पादौ जगृहतुर्मुदा (वा॰ 1, 49, 17)। अहल्या ने राम का स्वागत किया। गौतम खुश हुए, अहल्या को स्वीकार लिए।

यहां श्रीराम की महिमा बढ़ाने के लिए अहल्या की कल्पित कथा से श्रीराम को उद्धारक के रूप में जोड़ा गया है। परन्तु यहां (वाल्मीकीय रामायण में) न अहल्या पत्थर हैं और न श्रीराम उन पर अपने पैर रखते हैं, किन्तु अहल्या एक उपेक्षिता के रूप में तप करती है। श्रीराम-लक्ष्मण अहल्या के पैर छूकर उनका नमस्कार करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अहल्या को पत्थर बना दिया है और राम के पैरों का उसमें स्पर्श कराकर उन्हें पुन: सजीव नारी बनाया है।

गौतम नारि श्रापबस, उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहति, कृपा करहु रघुवीर॥
परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।

भक्ति-भावना का अतिरेक मनुष्य को कहां से कहां बहा ले जा सकता है और कितनी असत्य कथाएं गढ़ा सकता है, यह धार्मिक कही जाने वाली किताबों से जाना जा सकता है।

719. प्रश्न—रामायण में वर्णित सुलोचना द्वारा अपने पति के कटे सिर से बातचीत करना कहां तक सच है?

उत्तर—बिलकुल झूठ है, यह बात न वाल्मीकीय रामायण में है और न प्रामाणिक मानस में। यह प्रक्षेप है। वैसे यह बात कहीं लिखी भी हो, तो भी तथ्यहीन है ही।

720. प्रश्न—जब सभा में द्रौपदी का चीर दुशासन खींचने लगा, तब क्या श्रीकृष्ण ने द्रौपदी का चीर बढ़ाया? बढ़ाया तो कैसे?

उत्तर—यदि कपड़ा दस हाथ का है, तो हजार भगवान के लगने पर भी वह एक सूत भी बढ़ नहीं सकता है। वस्तुत: श्रीकृष्ण की महिमा बढ़ाने के लिए यह कथा गढ़ी गयी है कि द्रौपदी की लाज बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने वस्त्रावतार धारणकर उनका वस्त्र बढ़ाया। विधर्मियों द्वारा समय-समय पर हजारों हिन्दू ललनाएं वस्त्रहीन करके बदिज्जत की गयी हैं, आज भी दुष्ट पुरुषों द्वारा असहाय अबलाएं बलात्कार का शिकार बनायी जाती हैं। वस्त्रावतारधारी भगवान कहां सो रहे हैं? वस्तुत: मनुष्य जब तक भगवान का पचड़ा छोड़कर अपने कदमों पर नहीं खड़ा होगा, मानवता नहीं जग सकती।

721. प्रश्न—मनुष्य अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में क्या सोचता है?

उत्तर—जिसका उसने पहले से अभ्यास कर रखा है।

722. प्रश्न—अदालत सच बोलने के लिए मुजरिम से कसम खिलाती है, परन्तु उसी अदालत में वकील झूठ-पर-झूठ बोलता है, ऐसा क्यों?

उत्तर—अदालत मुजरिम से आशा रखती है कि वह सच बोल सकता है। उसे वकील से सच बोलने की कोई आशा ही नहीं है।

723. प्रश्न—क्या मात्र सत्संग से मोक्ष मिल सकता है?

उत्तर—सत्संग ही मोक्ष-प्राप्ति के साधनों में शुरुआत है और अन्त तक उसकी आवश्यकता है।

724. प्रश्न—क्या यह सत्य है कि किसी व्यक्ति के मरते समय उसके अंग में कोई निशान लगा दे, तो अगले जन्म में यह निशान बच्चे के अंग में आ जायेगा?

उत्तर—कहना कठिन है। शरीर तो यहीं जल या सड़ जाता है, उसका चिह्न अगले जन्म के शरीर में आ जाये, यह जमता नहीं। कोई वासनागत बात होने से अगले जन्म में उसका प्रभाव शरीर पर हो सकता है।

725. प्रश्न—अकेले में मन क्यों घबराता है? मन चाहता है किसी से मिलें, बातचीत करें या किसी काम में लग जायें।

उत्तर—मन की बहिर्मुख वृत्ति होने से ऐसा ही होता है। जब अनासक्ति तथा स्वरूपस्थिति की प्रगाढ़ता बढ़ जाती है, तब न किसी से मिलने का मन होता है और न बात करने का। ऐसे पुरुष भी यदि लोगों से मिलते तथा बात करते हैं, तो उनकी लोक पर बड़ी करुणा है। ऐसे पुरुष भी लोकमंगल का काम करते हैं। जब तक कोई स्वरूपज्ञानपूर्वक अपने आप निराधार एवं असंग होकर नहीं स्थित होगा, अकेले में घबरायेगा। जब असंग स्वरूपस्थिति में निमग्न हो जायेगा, तब वह अकेले में ही आनन्दित रहेगा, बल्कि दूसरे की उपस्थिति को ही बोझ समझेगा।

* * *

726. प्रश्न—गृहस्थ साधक को व्यापार करना अच्छा है कि बुरा? क्योंकि उसमें झूठ बोलना, क्रोध करना, उधारी वसूलने के लिए तगादा करना, मिलावट करना आदि हिंसापूर्ण काम करने पड़ते हैं?

उत्तर—व्यापार करना अच्छा है। किसी ग्राहक को धोखा देने के लिए झूठ न बोलो। ग्राहक को धोखा देने से अपना आध्यात्मिक पतन तो होगा ही,

व्यापार भी बैठ जायेगा, नष्ट हो जायेगा। अन्य झूठ से भी जितना बन सके बचा जा सकता है। क्रोध करना तो व्यापार के लिए विष है। व्यापारी को कोमलभाषी होना चाहिए। ग्राहक भले क्रोध करे, व्यापारी नहीं। कहा है—'बनिया को नरम तथा राजा को गरम होना चाहिए।'

सौदा उधार दिया जायेगा, तो तगादा करना ही पड़ेगा। यह कोई हिंसा नहीं। यदि किसी की विपन्नावस्था है, तो उसको परेशान न करे। रहा, मिलावट करना, जैसे घी में डालडा मिलना, डालडा में चर्बी मिलाना, चने में कंकड़ तथा इसी प्रकार अन्य मिलावट महापाप है। व्यापार में मिलावट उसका अभिन्न अंग मानना बिलकुल गलत है। व्यापार में मिलावट सबसे बड़ा पाप है। मिलावट करनेवाला हत्यारा से भी अधिक पापी है।

ग्राहक को धोखा दिये बिना व्यापार किया जा सकता है और उसके फल में जीवन-गुजर व्यापारी कर सकता है।

727. प्रश्न—हिन्दुओं में 24 अवतारों की कल्पना की गयी, परन्तु राम तथा कृष्ण को छोड़कर अन्य अवतारों की भक्ति वे क्यों नहीं करते?

उत्तर—बुद्धकाल के बाद श्रीकृष्ण को अवतार मानने के साथ उनकी उपासना भी चल पड़ी। पीछे से श्रीराम को अवतार माना गया और कृष्ण-उपासना का प्रभाव रामोपासना पर पड़ा। लोग राम की भी भक्ति करने लगे। किन्तु अन्य अवतारों के प्रति आज तक भक्ति नहीं जग सकी। वस्तुत: राम और कृष्ण का चरित्र-चित्रण कवियों ने ज्यादा किया, इसलिए उनके प्रति भक्ति भावना बढ़ गयी। अन्य अवतार अधूरे पड़े रह गये। सब मनुष्य की ही शोभा है। वह जिसको चाहे हीरा बना दे और जिसको चाहे मिट्टी।

728. प्रश्न—सांसारिक दुखों से कैसे बचें?

उत्तर—मन की चिंता एवं मोह त्यागकर।

729. प्रश्न—ऋषि और संत में क्या अन्तर है?

उत्तर—वेदों की ऋचाओं की रचना करने वाला ऋषि कहलाता है तथा निष्काम स्थिति में संतुष्ट पुरुष संत हैं।

730. प्रश्न—मैं नर्स का काम करती हूं। प्रसूति में भी काम करना पड़ता है। स्वजन-भक्तजन कहते हैं भक्त को यह सब नहीं करना चाहिए। क्या सच है?

उत्तर—सेवा करना उत्तम काम है।

731. प्रश्न—मैं सेवा करती हूं, प्रत्युपकार के बदले लोगों द्वारा मुझे कभी-कभी कष्ट मिलता है। अदीक्षित लोग कहते हैं कि तुम भक्त तथा सत्संगी

हो इसलिए ऐसा होता है, क्या समझें?

उत्तर—कहने वाले गलत कहते हैं। अच्छे कर्म का फल अच्छा होगा। यदि कहीं कष्ट मिल रहा है, तो निश्चित कहीं अपने कर्म खोटे हैं।

732. प्रश्न—पारख सिद्धांत में आध्यात्मिक साधनाएं क्या हैं?

उत्तर—पारख सिद्धांत में विवेक, द्रष्टा और स्थिति—ये तीन साधनाएं हैं। अपने चेतन स्वरूप को देहादि से पृथक विचारना विवेक है। सारे संकल्पों को देख-देखकर त्यागते रहना द्रष्टा-अभ्यास है तथा संकल्पों के शांत हो जाने पर यही दशा का बने रहना स्थिति या सहज समाधि है। यदि उक्त स्थितियां शीघ्र न आवें तो किसी संत पुरुष का ध्यान करना चाहिए जिनमें अपनी सहज श्रद्धा हो।

733. प्रश्न—''दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज मह काहु न ब्यापा।'' क्या यह सच है?

उत्तर—गोस्वामी तुलसीदास जी के ख्याल से महाराज श्रीराम परब्रह्म परमात्मा थे, अनन्त ब्रह्मांडनायक तथा सर्वशक्तिमान थे। जब सर्वाधार ब्रह्म ही अयोध्या पर राज्य कर रहे थे, तब उनके राज्य में दैहिक, दैविक, भौतिक ताप हो भी कैसे सकते हैं? श्रीराम का सर्वाधार ईश्वर होना एक कल्पना है, तो उसके साथ दूसरी कल्पना जुड़ गयी कि रामराज्य तीनों तापों से रहित था। गोस्वामी जी घोर कल्पनालोक के निवासी थे। उनकी रामायण उनकी प्रतिभा का चमत्कार है।

इसके अतिरिक्त हर अच्छा आदमी यही चाहता है कि संसार में कोई पाप-ताप न हो। अतएव उसकी वह कल्पना करता है। वस्तुतः संसार में कोई ऐसा समय न रहा है, न आगे आयेगा कि वह तीनों तापों से सर्वथा रहित हो। जहां सब कुछ क्षणभंगुर है, वहां ताप से सर्वथा बचा ही कैसे जा सकता है! हां, अपने मन को सबसे अनासक्त बनाकर तापों को सहने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है। रामराज्य में सबसे अधिक पीड़ित तो महाराज श्रीराम ही थे। इसीलिए तो जब आज भी कोई किसी के सामने अपना ज्यादा दुख सुनाता है, तब सुनने वाला कह बैठता है कि क्या यार, अपनी राम कहानी शुरू कर दिये! 'राम कहानी' का अर्थ ही हो गया है दुख भरी कथा।

734. प्रश्न—क्या मांसाहारी जीव मनुष्य शरीर नहीं पा सकते?

उत्तर—पा सकते हैं, पाते ही हैं। भारत में ही अधिक आदमी मांसाहारी हैं और भारत के बाहर तो घोर मांसाहारी हैं। किन्तु विदेश में भी जीव मनुष्य जन्म लेते ही हैं। यदि शाकाहारी लोग ही आगे मनुष्य जन्म धारण करें, तो

अपने इसी संस्कार से वे आगे भी शाकाहारी ही होंगे। अत: इस सिद्धांत से तो कोई मनुष्य मांसाहारी होगा ही नहीं। परन्तु संसार में मांसाहारी ही ज्यादा लोग हैं।

बात तो यह है कि मांसाहार मनुष्य के लिए गलत है कि सही? वस्तुत: मांस गंदा होता है, जीव वध करके मिलता है, गरिष्ठ तथा रोगवर्द्धक होता है, अतएव मांस खाना सर्वथा गलत है।

735. प्रश्न—क्या आप गुरुमुख-हीन व्यक्ति का दिया हुआ भण्डारा ले सकते हैं?

उत्तर—जरूर ले सकते हैं। जब कोई व्यक्ति साधु-संतों को भण्डारा (भोजन) देता है, उनकी सेवा करता है, तभी तो वह धीरे-धीरे गुरुमुख भी होता है।

736. प्रश्न—पूर्ण प्रयास करने पर भी सफलता न मिलने का क्या कारण है?

उत्तर—हो सकता है कि मान लिया गया हो कि मैंने पूर्ण प्रयास किया है, परन्तु किया न गया हो। प्रारब्ध अथवा भाग्य भी कारण हो सकता है। सफलता-असफलता में कारण प्राणी, पदार्थ, अवस्था, परिस्थिति आदि होते हैं, परन्तु अध्यात्मवादी अपने पुरुषार्थ तथा प्रारब्ध ही उनमें कारण मानता है। यही वास्तविकता भी है। अपने ही कर्मों के फल अपने को मिलते हैं।

737. प्रश्न—मन की परेशानी कैसे दूर हो?

उत्तर—अच्छी समझ से। अच्छी समझ के लिए संतों तथा सज्जनों की संगत करो और अच्छी पुस्तकें पढ़ो। जिसे गलत समझते हो उसे छोड़ते रहो तथा जिसे ठीक समझते हो उसका अभ्यास करते रहो।

738. प्रश्न—कहते हैं प्रेम के मूल में त्याग है, ऐसा क्यों?

उत्तर—भोगी आदमी मोह कर सकता है, प्रेम नहीं। मोह में ममता है, प्रेम में समता है। मोह अपने स्वार्थ के लिए होता है तथा प्रेम दूसरे की सेवा के लिए। बिना त्याग भाव के आये न कोई प्रेम कर सकता है और न सेवा।

739. प्रश्न—संगदोष क्या है?

उत्तर—प्राणी-पदार्थों के संग से जो मोह, लोभ, काम, द्वेष, ईर्ष्या, आसक्ति उत्पन्न होते हैं, यही संगदोष है।

740. प्रश्न—संगदोष से बचने का उपाय क्या है?

उत्तर—ऐसे प्राणी-पदार्थों की संगत से बचना चाहिए अर्थात उनसे दूर रहना चाहिए जिनके संसर्ग से विकार उत्पन्न हों। अच्छे-अच्छे लोग भी संगदोष से भ्रष्ट हो जाते हैं। अतएव संगदोष से बचो।

741. प्रश्न—अभिमन्यु ने क्या सचमुच अपनी माता के गर्भ में ही युद्ध-विद्या सीखी थी? कहते हैं अर्जुन ने अपनी पत्नी से युद्ध-विद्या की चर्चा की थी और उस समय अभिमन्यु गर्भ में थे। उन्होंने अपने माता-पिता द्वारा युद्ध-विद्या की बात सुनकर गर्भ में ही उसे सीख ली थी।

उत्तर—यह बात असम्भव है। गर्भस्थ शिशु माता-पिता की बात न सुन सकता है न सीख सकता है। हां, अभिमन्यु के अपने पूर्वजन्मों के संस्कार तथा माता-पिता के बीजी असर उन पर हो सकते हैं।

742. प्रश्न—कहते हैं बच्चा जब माता के गर्भ में रहता है, तभी ईश्वर से भक्ति करने की बात कबूल कर बाहर आता है और यहां माया में भूलकर भक्ति नहीं करता। यह बात कहां तक सच है?

उत्तर—यह सब उपदेश करने का एक तरीका मात्र है। गर्भवास में जीव को इतनी चेतना नहीं रहती है कि वह ईश्वर की कल्पना कर सके तथा उससे प्रार्थना या भक्ति कबूल सके।

743. प्रश्न—दया, सदाचार, वैराग्य, ज्ञान आदि को उपलब्ध होकर कोई व्यक्ति सन्मार्ग में चलता है, परन्तु उसने किसी गुरु से न दीक्षा ली है न उसका कोई वेष है। क्या उसका मोक्ष हो सकता है?

उत्तर—जबानी जमा-खर्च से काम नहीं चलता। बिना दृढ़ आधार के इस दुर्गम मानसिक धारा को पार नहीं जाया जा सकता।

744. प्रश्न—मानव जीवन के लक्ष्य की पूर्ति कहां होगी गृहस्थी में या वैराग्य में?

उत्तर—हर आदमी पहले गृहस्थी में ही होता है। अतएव उसे जहां है, वहीं से सत्संग, निर्णय, विवेक, सदाचार पालन, मनोनिग्रह आदि करना चाहिए और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए। जब वह उतनी उन्नति कर लेगा जितनी कि गृहस्थी में सम्भव है, तो आगे अवश्य विरक्त हो जायेगा।

745. प्रश्न—विराट रूप दर्शन क्या है? कुरुक्षेत्र में कृष्ण ने अर्जुन को तथा मां कौसल्या को बालक राम ने अपने विराट रूप दिखाये, यह क्या है?

उत्तर—यह कहीं नहीं दिखलाया है। यह सब पंडितों ने कागज में लिख-लिखकर फैलाया है। श्रीकृष्ण अनन्त ब्रह्मांड नायक होते तो वे महाभारत युद्ध

तथा यादवों का विनाश होने ही नहीं देते। वे तो बेचारे अपने परिवार—यादवों को शराब पीने से नहीं रोक सके और परिवार के लोग घोर शराबी होकर उन्हीं के सामने कटकर मर गये।

वाल्मीकीय रामायण में कहीं नहीं लिखा है कि राम ने कौसल्या को विराट रूप दिखाया। यह सब गोस्वामी तुलसीदास जी की महिमा है, राम की नहीं। श्रीराम तो वाल्मीकीय रामायण में कहते हैं—"मैं दशरथ का लड़का राम हूं और एक मनुष्य हूं—इतना ही समझता हूं" यथा—

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्॥

(वाल्मीकीय रामयण 6, 117, 11)

प्रामाणिक वाल्मीकीय रामायण में कहीं भी श्रीराम के लिए भगवान शब्द तक का प्रयोग नहीं हुआ है।

746. प्रश्न—भक्तिमार्ग या ज्ञानमार्ग—किधर चलूं?

उत्तर—दोनों की जरूरत है। भक्ति सत्पुरुषों के प्रति श्रद्धा समर्पण एवं विनयभाव है। उसके बिना कुछ न होगा, और ज्ञान के बिना भटकना तो है ही।

747. प्रश्न—मीरा ने कृष्ण-भक्ति के प्रभाव में जहर भी पी लिया था। क्या भक्ति के प्रभाव से विष अपना प्रभाव त्याग सकता है?

उत्तर—यह सब भक्ति के प्रभाव के प्रचार के लिए कहा गया है। यह महिमा की कथा है, जो असत्य है। जहर अपना प्रभाव डालेगा ही। ऐसी-ऐसी बहुत असम्भव बातें कबीर साहेब के लिए भी लिखी हैं, जो असत्य महिमा है।

748. प्रश्न—कुछ लोग निराकार एवं शून्य को ही सर्वोच्च तत्त्व मानते हैं, क्या समझें?

उत्तर—निराकार या शून्य कोई तत्त्व नहीं है। शून्य का जानने वाला शून्य से पृथक है। सबका ज्ञाता, बोद्धा, साक्षी चेतन शून्य नहीं है। यदि वह देह सम्बन्ध रहित मुक्ति अवस्था में हो जाये तो वह शून्य नहीं हो जायेगा। जो सत्तावान है, वह शून्य कैसे हो जायेगा!

749. प्रश्न—सबसे ज्यादा दुख क्या है तथा सर्वोच्च सुख क्या है?

उत्तर—मन की उलझन सबसे बड़ा दुख है तथा मन की शांति सबसे बड़ा सुख है। गोस्वामी जी ने कहा है—

सात दीप नौ खंड में, तीन लोक जग माहिं।
तुलसी सांति समान सुख, अपर दूसरो नाहिं॥

(वैराग्य संदीपनी)

750. प्रश्न—गांधीजी ने लिखा है कि बिना यज्ञ किये जो अन्न खाता है, वह चोरी का अन्न खाता है, इसका क्या अर्थ है?

उत्तर—यहां यज्ञ का अर्थ है सेवा। जो बिना सेवा किये अन्न खाता है, वह चोरी का अन्न खाता है। अत: सेवा करके खाओ।

751. प्रश्न—जीव कर्ता-भोक्ता है या नहीं?

उत्तर—देह सम्बन्ध में जीव कर्ता-भोक्ता है। विदेह शुद्ध जीव न कर्ता है न भोक्ता।

752. प्रश्न—किसी के मरने पर मूड़ मुड़वाना, मृतक की शांति के लिए अस्थि गंगाप्रवाह करना तथा क्रिया-कर्म करना क्या ठीक है?

उत्तर—जो जीव अपने कर्म को लेकर जा चुका है, उसके नाम पर चाहे जो कुछ करो, उसे कुछ मिलने वाला नहीं है। मृतक मनुष्य के छोड़े हुए धन में से यथासम्भव जनकल्याण में लगाना ही उसका श्राद्ध करना (श्रद्धा से किया जाने वाला काम) है। बाकी सब लोकपरम्परा है।

753. प्रश्न—किसी के मरणोपरान्त किस ग्रंथ का पाठ करें?

उत्तर—अपने-अपने धर्मग्रन्थ का सभी पाठ करते हैं। कबीरपंथियों को बीजक पाठ करना चाहिए तथा कबीरपंथ में बने हुए अनेक सरल ग्रंथ हैं, उनका पाठ करना चाहिए। यह ग्रन्थपाठ घर वालों के संतोष के लिए तथा ज्ञान के लिए है न कि मृत आत्मा के लिए।

754. प्रश्न—क्या अमुक मत के संतों-भक्तों में आपसी प्रेम कम है?

उत्तर—प्रेम और घृणा का सम्बन्ध मत-पथ से नहीं किन्तु लोगों के शुद्ध-अशुद्ध मन से ही है। कोई मत वैर करना नहीं सिखाता।

755. प्रश्न—मूर्च्छित लक्ष्मण को जगाने के लिए जब हनुमान हिमालय पर्वत खण्ड लेकर आकाशमार्ग से अयोध्या के ऊपर आये, तब भरत के बाण से वे गिर पड़े। उस समय हनुमान के हाथ का पर्वत खण्ड कहां रहा?

उत्तर—हनुमान की हिमालय यात्रा तो वाल्मीकीय रामायण में है, परन्तु उनका अयोध्या में भरत के द्वारा बाण से गिराया जाना तथा हनुमान भरत-मिलन नहीं है। यह कथा मानस में जोड़ी गयी है। वैसे हनुमान की हिमालय यात्रा भी विद्वान लोग वाल्मीकीय रामायण में प्रक्षिप्त ही मानते हैं। काल्पनिक तो है ही। 'रामायण रहस्य' में तदस्थल देखिए।

756. प्रश्न—वामन द्वारा बलि का छला जाना तथा वामन के अपने पैरों से सारी पृथ्वी नाप लेना कहां तक सत्य है?

उत्तर—पुराणों के अनुसार वामन इन्द्र के छोटे भाई हैं। बलि दैत्य-वंशी हैं तथा इंद्र देववंशी। एक पिता कश्यप की दो पत्नियों दिति तथा अदिति से क्रमश: दैत्य और देवता पैदा हुए। देवपति इन्द्र ईर्ष्यालु तथा शिथिल आचरण था और दैत्यपति बलि धर्मात्मा थे। इस कथा का इतना ही सार है कि वामन ने अपनी पार्टी के मुखिया इन्द्र की राजगद्दी के लिए बलि को धोखा दिया। तीन पग से सारा विश्व नापना आलंकारिक कथन मात्र है।

757. प्रश्न—जब परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का नाश कर डाला, तो आज क्षत्रियों की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर—महाभारत के शांतिपर्व में लिखा है कि परशुराम क्षत्रियों को मार डालते थे। उसके बाद गर्भवती क्षत्राणियां जब पुन: बच्चा पैदा करती थीं, तब उनके जवान होने पर वे पुन: उन्हें मार डालते थे। एक परशुराम क्षत्रियों की इक्कीस पीढ़ी तक बैठे रहे, यह एक कल्पना है। सार इतना हो सकता है कि परशुराम इक्कीस बार क्षत्रियों पर चढ़ाई करके उनका विध्वंस किये। यह ब्राह्मण-क्षत्रियों की लड़ाई थी, जैसे वसिष्ठ-विश्वामित्र में हुई थी। किसी की वंशावली प्राय: उच्छिन्न नहीं होती। क्षत्रिय आज भी बचे ही हैं। फिर क्षत्रियत्व एक स्वभाव है, वह किसी भी जाति में हो सकता है।

758. प्रश्न—नारियल फटने पर प्रसाद बनता है, दूध फटने पर छेना बनकर रसगुल्ला बनता है, कली फटने पर फूल बनता है, परन्तु प्रतिष्ठावान लोकप्रिय व्यक्ति का इज्जत रूपी परदा फटने पर वह क्या बनता है?

उत्तर—लज्जित बनता है। परन्तु यदि उसने पूर्ण विनम्र बनकर अपने दोषों के लिए पूर्णतया ग्लानि कर ली और उसे सर्वथा सदा के लिए छोड़कर अपने आप का वह सुधार करने लगा, तो वह भी एक उच्च मानव बन सकता है।

जो दोष करके भी उसे नहीं स्वीकारता, उसे सब दोषी कहते हैं और निरादरित करते हैं, परन्तु जो बेखटके अपने दोष पूर्णतया स्वीकार लेता है, उसे कोई कुछ नहीं कह सकता तथा वह सबका प्राण प्यारा बन जाता है।

759. प्रश्न—अपने गुण-अवगुण की पहचान कैसे हो?

उत्तर—सज्जन-संतों से अपने विषय में राय लो तथा स्वयं एकांत में अपने आप से पूछो।

760. प्रश्न—ज्ञानी की व्यवहारकाल में स्वरूपस्थिति रहती है कि नहीं?

उत्तर—ज्ञानी सब समय स्वरूपस्थिति में रहता है।

761. प्रश्न—अकबर बादशाह के समय तानसेन तथा बैजू बावरा के संगीत से संगमरमर पत्थर पिघलकर पानी बन गया। यह कहां तक सत्य है?

उत्तर—सर्वथा असत्य है। चेतन प्राणी विशेषत: मनुष्य संगीत सुनकर भावविह्वल हो सकता है, पानी वह भी नहीं बनेगा, फिर जड़ पत्थर संगीत से पानी बन जाये, यह कथन सर्वथा गप्पबाजी है।

762. प्रश्न—कबीर साहेब विरक्त संत थे। उन्होंने बीजक में ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, सदाचार, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उत्थान की बातें कही हैं, परन्तु गृहस्थों के जनम, विवाह, मृत्यु इत्यादि के संस्कारों की विधि नहीं बतायी है। मैं कबीर साहेब के सिद्धान्तों को भलीभांति मानता हूं, परन्तु किस संस्कार को लेकर गृहस्थी जीवन निभाऊं? स्वामी दयानन्द भी विरक्त थे, परन्तु उन्होंने सोलह संस्कारों की विधि लिखी है। लोग कहते तथा व्यंग्य करते हैं कि तुम यदि कबीर साहेब के सिद्धान्तों को मानते हो, तो विरक्त हो जाओ। क्या उत्तर दूं?

उत्तर—कबीरपंथ में विरक्त साधु तो थोड़े हैं, गृहस्थ कबीरपंथियों की विशाल संख्या भारत तथा विदेशों में फैली है और उनका हर काम चलता है। कबीर साहेब फक्कड़मस्त परम विरक्त संत थे। उन्होंने पंथ की व्यवस्था नहीं की। उनके शिष्यों द्वारा पंथ पीछे से बना है। स्वामी दयानन्द जी ने यद्यपि कहा है कि मैं कोई नया सम्प्रदाय नहीं चलाने जा रहा हूं, परन्तु उन्होंने एक नवीन सम्प्रदाय की व्यवस्था की है और उन्होंने गृह्यसूत्रों तथा मनुस्मृति के आधार पर सोलह संस्कार विधि लिखकर प्रचलित किया है।

कबीरपंथ का दायरा बहुत बड़ा है। इसकी संख्या शहरों में कम, देहातों में ज्यादा है। भारत के हर प्रदेश में इसका विस्तार है, परन्तु मध्यप्रदेश, गुजरात, बिहार आदि में ज्यादा है। कबीरपंथ में कई शाखाएं हैं। जहां इनकी संख्या सघन तथा पुरानी है, वहां इनके अपने ढंग से संस्कार हैं। विवाह किसी बुजुर्ग के साक्षित्व में वर-वधू एक-दूसरे को फूल-माला पहनाकर कर लेते हैं। मृत्यु में शव को गाड़ना, जलाना तथा जलप्रवाह—तीनों प्रचलित हैं। इसके पीछे पारिवारिक भोज तथा संत भंडारा आदि भी कर लेते हैं। गुजरात में फैले 'राम कबीर' मत में उनके अपने संस्कार हैं जो ब्राह्मण-कर्म से पृथक स्वतंत्र, सरल तथा सादा हैं।

कभी-कभी विदेश से भी पत्र आता है, और भारत के विविध प्रांतों से हमारे पास बराबर पत्र आ रहे हैं कि "आप जन्म, विवाह, मृत्यु आदि की संस्कार विधि पर एक पुस्तक लिख दें।" मैं सोचता हूं, यह काम पंथ की सभी शाखाओं के संत-भक्त मिलकर करें तो अच्छा है। जब भारत में कबीरपंथ की

एक विशाल संख्या गृहस्थी में रहकर कबीर साहेब के सिद्धान्तों पर चल रही है, तब आपको भी उनके सिद्धान्तों पर चलने में अड़चन नहीं होना चाहिए।

763. प्रश्न—मुक्त जीव कहां रहता है? कैसे जानें कि अमुक जीव मुक्त हो गया?

उत्तर—जीते जी समस्त आसक्तियों, मानसिक ग्रंथियों से मुक्त हो जाना ही जीवन्मुक्ति है और इसका अनुभव वही कर सकेगा, जो अपने को समस्त आसक्तियों से अलग कर लेगा। विदेह अवस्था में रहने के लिए कोई स्थान-मकान नहीं है। जो स्थान बताते हैं, वे एक कल्पना की उड़ान भरते हैं। हर मूल वस्तु अपने आप रहती है। मुक्त जीव भी अपने आप रहेगा। जब जड़ वस्तु का मूल रूप नष्ट नहीं होता, तब जीव क्यों नष्ट होगा? किसी के जीवन की अनासक्त रहनी देखकर ही कोई अनुमान कर सकता है कि वह व्यक्ति शरीर छूटने पर विदेहमुक्त हो गया, अन्य कोई आधार नहीं। दूसरे की मुक्ति के विषय में जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। सब आसक्ति दूर करके अपने आप को जीते जी मुक्त करो। इसी में परम सुख है।

764. प्रश्न—ईश्वर तथा भगवान का क्या अर्थ है? प्राय: लोग कहते हैं 'भगवान जाने'।

उत्तर—ईश्वर कहते हैं स्वामी को, भगवान कहते हैं ऐश्वर्यवान को। जो बात अपनी अक्ल में नहीं आती, उसे मनुष्य कह देता है 'भगवान जाने।' यह उसका 'तकिया कलाम' है। श्री निर्मल साहेब ने कहा है ''अपनी अकल में जो आता नहीं है। उसे कम अकल ने खुदाई कही है।''

765. प्रश्न—क्या चमड़ा काटने वाले व्यक्तियों को अछूत मानना चाहिए?

उत्तर—बिलकुल नहीं। जब आदमी स्नान कर लिया, तब शुद्ध हो गया। हर आदमी अपनी टट्टी धोता है, वह स्नान करके शुद्ध हो जाता है, तद्वत।

766. प्रश्न—संसार में मेरे होने की क्या सार्थकता है?

उत्तर—अपने और दूसरे का कल्याण करना।

767. प्रश्न—क्या हजरत मुहम्मद खुदा के संदेशवाहक हैं?

उत्तर—यह मुसलमानों की मान्यता है। जब खुदा ही का पता नहीं है, तब उसका संदेशवाहक दरगुजर है।

768. प्रश्न—सरल साधना क्या है?

उत्तर—बुरे विचारों की तरफ न जाना।

769. प्रश्न—इंसान खुली आंखों के रहते हुए भी ठोकर क्यों खाता है?

उत्तर—क्योंकि भीतर की आंखें ढकी हैं।

770. प्रश्न—खुशी में तो आंसू आ जाते हैं, परन्तु दुख में हंसी क्यों नहीं आती?

उत्तर—क्योंकि दुख में मन मुरझा जाता है।

771. प्रश्न—मकड़ी जाल बुनकर भी उसमें नहीं फंसती, परन्तु मनुष्य अपने बुने हुए जाल में क्यों फंस जाता है?

उत्तर—क्योंकि वह अधिक मोही है।

772. प्रश्न—साधु अपनी मां की दूध की कीमत कैसे चुकाता है?

उत्तर—अनेकों मां तथा मां के लालों को बोध देकर।

773. प्रश्न—ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की उत्पत्ति कैसे, उनकी वंशावली क्या है?

उत्तर—ये क्रमश: रज, सत तथा तम गुण के प्रतिनिधित्व करने वाले कल्पित देवता हैं। यदि इन नामों के व्यक्ति कभी रहे, तो उनकी उत्पत्ति के विषय में विवेकपूर्ण समाधान कहीं नहीं है। विष्णु क्षीरसागर में सोये थे। उनकी नाभि से कमल निकला। उसमें ब्रह्मा बन गये। ब्रह्मा रोये तो रुद्र पैदा हो गये इत्यादि ऊटपटांग कल्पनाएं हैं। इतना समाधान काफी है कि यदि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व्यक्ति थे, तो वे अपने मां-बाप से पैदा हुए होंगे।

774. प्रश्न—श्रवणकुमार के माता-पिता के नाम क्या थे तथा उनकी वंशावली क्या थी?

उत्तर—श्रवणकुमार के माता-पिता नेत्रहीन तथा बूढ़े थे, इतना ही वाल्मीकीय रामायण में लिखा है। यह भी लिखा है कि पिता वैश्य जाति के तथा माता शूद्र जाति की थीं (वा०, अयोध्या कांड, सर्ग 63, श्लोक 51)। सबके माता-पिता के नाम तथा वंशावली का पता न लग सकेगा न उसकी आवश्यकता है। हम या आप अपनी नानी की नानी का ही नाम नहीं बता पायेंगे। सब लोग अपनी नानी का ही नाम नहीं जानते या अपने पिता के पिता, परपिता तथा पितामह के नाम नहीं जानते।

775. प्रश्न—मुरगी, मछली, बकरी, सुअर के पालन का अभियान सरकार चलाती है, परन्तु शाकाहार, सदाचार का नहीं। यदि सारा विश्व शाकाहारी हो जाये, तो सरकार की योजना फेल हो जायेगी। परन्तु तब मछली, मुरगी, बकरी

आदि का उपयोग क्या होगा?

उत्तर—घबराओ मत, विश्व में शाकाहारी कम ही लोग रहेंगे और मछली, मुरगी आदि का सदुपयोग मांसभक्षी मानव करते रहेंगे। स्वयं शाकाहारी-सदाचारी बनो, संसार की चिन्ता छोड़ दो। मांसाहारी लोग कौए, बगुले, गिद्ध आदि का सदुपयोग नहीं करते, यही आश्चर्य है।

776. प्रश्न—सद्गुरु कबीर का चित्र जो पंथ में मान्य है, उसमें चित्रित वेष क्या प्रामाणिक है कि कबीर साहेब ऐसे ही भेष रखते थे?

उत्तर—कबीर साहेब प्रामाणिक थे। उनके दिव्य विचारों को लेकर अपना कल्याण करो। उनके चित्र में चित्रित भेष भी प्रामाणिक हो सकते हैं। भक्त लोग अपनी रुचि के अनुसार भी उनके चित्र में भेष बढ़ा-घटा दिये हों, तो कोई आश्चर्य नहीं। श्रीराम तथा श्रीकृष्ण का जमाना पंचकेश रखने का था। उस समय प्रायः लोग दाढ़ी-मूंछ सब रखते थे; परन्तु भक्तों ने न श्रीराम-श्रीकृष्ण के चित्र में दाढ़ी-मूंछ रहने दी और न उनके चित्र को प्रौढ़ या वृद्ध रूप चित्रित किया। यहां तक कि महात्मा बुद्ध की दाढ़ी-मूंछ और बुढ़ापा उनके चित्र से खारिज कर दिये गये। क्योंकि भक्त अपने उपास्य को सुन्दर भी देखना चाहते हैं। अतएव सार लो।

777. प्रश्न—मुरदों की अन्त्येष्टि कैसे करें?

उत्तर—गाड़ना, जलाना, जल प्रवाह करना—सुविधानुसार कुछ भी किया जा सकता है, परन्तु उसके बाद कोई कर्मकांड करने की आवश्यकता नहीं। हां, मृतक के संचित धन का कुछ हिस्सा जन-कल्याण में लगाना चाहिए।

778. प्रश्न—चौका-आरती में चेतन-पूजा होती है, जड़-पूजा नहीं, तो उसे करना क्या बुरा है?

उत्तर—"जस जस परखत फीका होई। व्यापै न काल कला पुनि सोई।" जब तक अच्छा लगे, करो, जब अच्छा नहीं लगेगा, तब अपने आप छूट जायेगा।

779. प्रश्न—शून्य मरे अजपा मरे, अनहद हू मर जाय। सुरति मरे निरति मरे, तब जिव कहां समाय?

उत्तर—इसका अर्थ यही मालूम होता है कि शून्य, अजपाजप, अनाहतनाद श्रवण, सुरति तथा निरति—ये सब चेतन जीव से अलग हैं। अतः अपने चेतन स्वरूप में स्थित होओ। तुम यदि शून्य, अजपाजप आदि नश्वर भासों में लगे रहोगे तो जीव की स्थिति कहां होगी! अतः भास छोड़कर अपने स्वरूप में स्थित होओ।

780. प्रश्न—यदि लोग किसी की सादगी, सहनशीलता तथा शांतिप्रियता को उसकी कमजोरी तथा उसका दब्बूपन मानते हों, तो?

उत्तर—उनकी भूल है। हम सादगी, सहनशीलता तथा शांतिप्रियता को न छोड़ें। अन्ततः हमारी विजय होगी।

781. प्रश्न—यदि सब सद्प्रयत्न करने पर भी पड़ोसी लड़ाई-झगड़े पर ही तैयार हो, तो क्या करें?

उत्तर—द्वेष और घृणा से झगड़ा नहीं शांत होगा, प्रेम का व्यवहार ही शांति ला सकता है। हम प्रेम का व्यवहार करें या तटस्थ रहें, पड़ोसी आज नहीं, तो कल समझेगा।

782. प्रश्न—यदि अधिकारी अपने मातहत से गलत काम करवाना चाहे तो मातहत क्या करे? न करने से मातहत को अनिष्ट की आशंका हो सकती है।

उत्तर—ऐसी जगह में कुछ नरम बनकर रहना पड़ता है, फिर भी यथासंभव किसी का अनिष्ट न सोचो।

783. प्रश्न—गृहस्थ को देश-विदेश की खबरों से सरोकार?

उत्तर—जरूर सरोकार रखना चाहिए, किन्तु संयमपूर्वक।

784. प्रश्न—ब्रह्म जब चेतन रूप है, तब उससे जड़तत्त्व कैसे पैदा हुए?

उत्तर—इसलिए सिद्ध है कि चेतन ब्रह्म से जड़तत्त्व नहीं पैदा हुए, किन्तु वे अनादि स्वतः हैं।

785. प्रश्न—कहा जाता है एक तत्त्व दूसरे तत्त्व में मिले हैं, फिर चंद्रलोक में आक्सीजन क्यों नहीं?

उत्तर—जितने तत्त्व वहां होंगे, एक दूसरे से संयुक्त होंगे ही। जिन तत्त्वों का वहां अभाव या न्यूनता है उनकी बात ही क्या!

786. प्रश्न—मैं जब कोई काम करने की इच्छा प्रकट करता हूं, तब वह बन नहीं पाता है, क्यों?

उत्तर—इच्छाशक्ति एवं दृढ़ संकल्पशक्ति का अभाव ही कारण है।

787. प्रश्न—विष्णु ने वृन्दा से छलकर उसका सतीत्व नष्ट किया, क्या यह गाथा सच है?

उत्तर—वृन्दा के सतीत्व नष्ट होने पर ही जालंधर की मृत्यु की सम्भावना थी, यह अपने आप में एक महा गपास्टक है। महान विष्णु ऐसा बेतुका और

नीच काम करे—यह समझ में नहीं आता। पंडितों ने यह सब लिखकर जगत का क्या कल्याण किया!

788. प्रश्न—क्या क्रोधावेश में जलकर मरने वाले व्यक्ति की आत्मा भटकती रहती है या पुनर्जन्म को प्राप्त होती है?

उत्तर—सभी कर्मवशी जीव पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं।

789. प्रश्न—कहा जाता है ''पहले जन्म में बुरा किया था, तो आज उसका फल भोगना पड़ रहा है।'' तो क्या बुरा कर्म करने पर भी मनुष्य जन्म मिलता है?

उत्तर—मनुष्य जन्म केवल अच्छे कर्मों से ही मिलता है, यह बात नहीं है। जहां जन्म है, वहां उसके मूल में शुभाशुभ दोनों कर्म रहते हैं। यदि बुरे कर्म न होते, तो आदमी निर्बुद्धि, अन्धा, लूला, महारोगी आदि क्यों होता! हां, इस जीवन में हम सत्संग द्वारा सद्बुद्धि प्राप्त कर अपने को सुधार सकते हैं।

790. प्रश्न—मथुरा में जब सद्गुरु कबीर धर्म साहेब को दर्शन दिये, तब मरी चीटियों को जिला दिये, क्या यह सच है?

उत्तर—असंभव है। कबीर साहेब का महत्त्व उनके सच्चे ज्ञान तथा त्याग में है।

791. प्रश्न—चार्वाक शास्त्र का रचयिता क्या नास्तिक है?

उत्तर—संसार में एक व्यक्ति भी नास्तिक नहीं मिलेगा, क्योंकि नैतिकता को सब मानते हैं।

792. प्रश्न—पक्की देह का अर्थ क्या है?

उत्तर—सद्गुण-सदाचार की स्थिति।

793. प्रश्न—क्या मनुष्य होना अपराध है?

उत्तर—कौन कहता है? सच्चा मनुष्य होना ही तो पुण्य है।

794. प्रश्न—मनुष्य जब जन्म लेता है, तब खुद रोता है और वह जब मरता है, तब दूसरे को रुलाता है। फिर वह कब स्वयं हंसता तथा दूसरे को हंसाता है?

उत्तर—जब वह पवित्र जीवन जीता है।

795. प्रश्न—कोमल वाणी से काम न चले तो क्या कठोर वाणी से काम लेना चाहिए?

उत्तर—कोमल वाणी समर्थ शक्ति है। उसी से काम बनेगा। कठोर वाणी से यथासंभव बचो।

* * *

796. प्रश्न—गरीब तथा धनवान सेवक के लिए आपके चरणों में समान स्थान है कि अलग-अलग?

उत्तर—स्वयं अनुभव करके देखो। जब तुम किसी के चरणों में समर्पित हो जाओगे, तब तुम्हारा यह प्रश्न समाप्त हो जायेगा।

797. प्रश्न—सावधान रहने पर भी रात में कभी-कभी कुविचार आ जाते हैं। कैसे बचें?

उत्तर—कुविचारों के आने पर उनमें अपना बल न दें। वे अपने आप समाप्त हो जायेंगे।

798. प्रश्न—जीभचटोरी कैसे मिटे?

उत्तर—सादा भोजन करने के अभ्यास से।

799. प्रश्न—शुभ संकल्पों में दृढ़ता कैसे बनी रहे?

उत्तर—उनमें लाभ जानकर।

800. प्रश्न—ठीक काम करने से प्रकृति मनुष्य का सहयोग कैसे करती है और गलत काम करने से वह दण्ड कैसे देती है, क्योंकि प्रकृति जड़ है?

उत्तर—जैसे सन्तुलित भोजन करने से जड़ भोजन सुख का कारण बनता है तथा असन्तुलित करने से दुख का।

801. प्रश्न—खानियों के कर्मों का विभाजन कौन करता है?

उत्तर—कर्मों के नियम, जैसे हिरन के सींग स्वयं मुड़े हुए बन जाते हैं तथा बिम्ब के अनुसार जल तथा दर्पण में स्वयं प्रतिबिम्ब बन जाते हैं।

802. प्रश्न—आत्मिक शक्तियां महान होते हुए सांसारिक रुचियों के सामने परास्त क्यों?

उत्तर—क्योंकि आत्मिक शक्तियां पूर्ण जगायी नहीं गयी हैं।

803. प्रश्न—राग, विराग तथा वीतराग में क्या अन्तर है?

उत्तर—जगत-आसक्ति राग है, उससे हटना विराग है तथा पूर्ण हट जाना वीतराग हो जाना है।

804. प्रश्न—वैज्ञानिक युग में धर्म का क्या स्थान है और धर्म का राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन में क्या उपयोग है?

उत्तर—हर युग में धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सत्य ज्ञान के अनुसार जीवन बनाना ही धर्म है। ज्ञान के अनुसार आचरण नहीं होगा, तो राष्ट्र, समाज, व्यक्ति—सब का पतन है। यह बात अवश्य है कि धर्म का नाम लेकर छली लोग अपने राजनैतिक, ऐन्द्रिक एवं वैषयिक स्वार्थ को पूर्ण करने में लगे रहे तथा आज भी लगे हैं। इनका परदाफाश करना चाहिए।

805. प्रश्न—क्या दुख मिटाया जा सकता है?

उत्तर—बिलकुल, सच्चे ज्ञान को पाकर।

806. प्रश्न—इंसान धरती पर क्या लेकर आता है और जाते समय क्या ले जाता है?

उत्तर—प्रारब्ध लेकर आता है और कर्मों का बंडल लेकर जाता है।

807. प्रश्न—घर का फाटक अन्दर से खुलता है, दुकान का फाटक बाहर से तो किस्मत का फाटक?

उत्तर—मेहनत से।

808. प्रश्न—जिन्दगी में सुख-दुख चलते ही रहते हैं, फिर भी इंसान दुख पड़ने पर झुंझला क्यों जाता है?

उत्तर—क्योंकि दुख अप्रिय है और उसे सहने की पूर्व तैयारी नहीं है।

809. प्रश्न—मौत से ज्यादा सच?

उत्तर—मौत को जानने वाला।

810. प्रश्न—गाय घास खाकर दूध देती है, परन्तु सांप दूध पीकर जहर देता है क्यों?

उत्तर—गाय में दूध बनाने का स्वभाव है तथा सांप में जहर बनाने का।

इसी प्रकार सद्‌गुणी आदमी दुर्गुणी में भी सद्‌गुण ढूढ़ लेता है, परन्तु दुर्गुणी मनुष्य सद्‌गुणी में भी दुर्गुणों की कल्पना करके उन्हीं का प्रचार करता है और फल में सांप की तरह कुचला जाता है।

811. प्रश्न—कबीर जयंती पर सरकारी छुट्टी क्यों नहीं होती?

उत्तर—सरकार को इतनी छुट्टी नहीं है कि वह किसी की जयंती पर छुट्टी के लिए सोचे। यह तो अनुयायियों-भक्तों का कर्तव्य है कि वे सरकार को

प्रभावित करने का प्रयत्न करें। कबीरपंथ एकजुट होकर ऐसा कुछ करता नहीं, किन्तु करना चाहिए। मध्यप्रदेश सरकार अपने प्रदेश में कबीर जयंती के दिन सार्वजनिक छुट्टी रखती है। केन्द्र ऐसा कर दे, तो सारे भारत में हो जाये। कबीर अनुयायियों के सर्वोपरि इष्ट कबीर साहेब ही हैं। सरकार को यह ध्यान में रखकर कबीर जयंती की सार्वजनिक छुट्टी करनी ही चाहिए।

812. प्रश्न—कबीरपंथ का केन्द्र कहां है जहां से सभी शाखाओं पर नियंत्रण होता है?

उत्तर—कबीरपंथ विकेन्द्रित है। उसमें अनेक शाखाएं हैं और सब अपनी-अपनी शाखाओं के अधिपति हैं। वैसे आज के संगठन-युग में समग्र कबीरपंथ की एक संस्था, एक संगठन और उसका एक केन्द्र कार्यालय होना चाहिए।

काशी सद्गुरु कबीर की आविर्भावस्थली तथा कार्यस्थली रही है। वहां केन्द्र कार्यालय बनाकर पूरे कबीरपंथ का संगठन किया जा सकता है। पंथ की शाखाओं में दार्शनिक मान्यता तथा व्यवहारगत थोड़ा भेद होने पर भी सब एक जगह प्रेम से इकट्ठे हो सकते हैं और सद्गुरु कबीर के सार्वजनिक लोकल्याणकारी विचारों तथा सिद्धान्तों के आधार पर समाज जागरण का कार्य कर सकते हैं।

813. प्रश्न—एक गुरु के शिष्य भाई-भाई कहलाते हैं, तो एक ही गुरु से दीक्षित पति-पत्नी क्या भाई-बहन नहीं होंगे?

उत्तर—एक गुरु से दीक्षा लेकर पति-पत्नी—दोनों गुरु के शिष्य-शिष्या हैं, भाई-बहन नहीं। यदि भाई-बहन का भाव कोई रखना चाहे, तो अच्छा है, किन्तु वे दोनों ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी बन जायें। महात्मा गांधी तथा कस्तूरबा का उदाहरण प्रस्तुत कर दें।

814. प्रश्न—क्या सूक्ष्म शरीर का जीव स्थूल शरीर के जीव से सम्पर्क कर सकता है?

उत्तर—बिलकुल नहीं। केवल सूक्ष्म शरीर सम्बद्ध जीव अचेत रहता है। वह कर्म के अनादि नियमानुसार शरीर धारण करने के लिए सूक्ष्म शरीर द्वारा यथास्थान गमन करता है।

815. प्रश्न—कबीर साहेब ने गुरु का महत्त्व परमात्मा से भी अधिक क्यों बताया?

उत्तर—परमात्मा क्या है, इसका परिचय गुरु ही देता है, अत: गुरु श्रेष्ठ पूज्य है।

816. प्रश्न—साहेब ने पंडित होने की कौन-सी योग्यता बतायी है?

उत्तर—प्रेममय जीवन। 'ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

817. प्रश्न—सद्गुरु कबीर ने अपने निंदकों को निकट बसाने के लिए क्यों कहा है?

उत्तर—जिससे वे बिना पानी-साबुन के हमारे स्वभाव को निर्मल करते रहें। माता ने हमारे मल को हाथ से धोया है, किन्तु निंदक हमारे मल को अपने मुख से धोता है।

818. प्रश्न—संतों ने अच्छे मित्र के लक्षण क्या बताये हैं?

उत्तर—बुरे मार्ग से बचाना, अच्छे मार्ग में लगाना, गोपनीय बातों को छिपाना, गुणों को प्रकट करना, आपत्ति काल में त्याग न करना, समय आने पर सहायता करना—यह सन्मित्र के लक्षण हैं।[1]

819. प्रश्न—यदि जंगली सुअर या सिंह कहीं कीचड़ आदि में फंसा हो, तो हमें उसे निकालने का प्रयत्न करना चाहिए कि वहां से भाग निकलना चाहिए?

उत्तर—जैसा साहस हो।

820. प्रश्न—पेड़-पौधे जब सचेतन हैं, तब उनसे फल, सब्जी, अन्नादि लेकर खाना मांसाहार है। इससे कैसे बचें?

उत्तर—पेड़-पौधे निर्जीव हैं। उनमें चेतन नहीं है। अत: फल, सब्जी, अन्नादि खाना शाकाहार ही है, मांसाहार नहीं।

821. प्रश्न—गृहस्थी बिना कलह के कैसे चल सकती है?

उत्तर—स्वार्थ तथा अहंकार को जीतकर और सन्तोष एवं समता से बरताव करके।

* * *

822. प्रश्न—सभी देवताओं की पूरी मूर्ति की पूजा होती है, परन्तु शिव के केवल लिंग ही की क्यों?

---

1. **पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटी करोति।**
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्त:॥

उत्तर—कहा जाता है भारत में आदिवासी लोग लिंग की पूजा करते थे। जब आर्यों से उनका परिचय हुआ, तब आर्य लोग लिंगपूजकों को घृणा से देखते थे और उन्हें 'शिश्नदेवा' कहकर उनका मजाक करते थे कि ये शिश्न को देवता मानने वाले कितने नासमझ हैं। 'शिश्नदेवा' शब्द ऋग्वेद का ही है जो आदिवासियों पर आर्यों का व्यंग्य है।

पीछे जब आर्यों तथा आदिवासियों की संस्कृतियां मिल गयीं, तो लिंग-पूजा आर्यों में भी आ गयी।

इतिहास के पंडितों का मत है कि शिवपूजा वैदिक नहीं है। वैदिक देव अग्नि, इन्द्र, वरुण, पूषण (सूर्य), ऊषा, सोम, पर्जन्य आदि हैं। ऋग्वेद का एक देवता रुद्र है, परन्तु वह प्राकृतिक शक्ति है, जिससे आंधी, तूफान, बिजली, बाढ़, वज्रपात, महामारी, भूकम्प आदि आते हैं। परन्तु ऐसा रुद्रशिव जो भांग-धतूरा खाता हो, गजचर्म एवं मुण्डमाला पहनता हो, श्मशान में रहता हो, राख और सांप देह में लपेटता हो, बैल की सवारी करता और उसका लिंग पूजा जाता हो—इसका पता वेदों में कहीं नहीं है।

विद्वानों का मत है कि शिवपूजा आर्यों की नहीं, किन्तु द्राविड़ों तथा भारत के आदिवासियों की है। मोहन-जोदड़ो तथा हड़प्पा की खुदाई में शिव की समाधिनिष्ठ मूर्तियां मिली हैं, जो आर्यों के पूर्व की थीं।

पहले के आर्य शिवपूजा नहीं मानते थे। शिवपुराण में लिखा है कि ऋषियों ने शिव को शाप दिया और उनके लिंग के नौ टुकड़े हो गये। शिव पर चढ़ाये गये प्रसाद हिन्दुओं को खाने का विधान नहीं है। इससे लगता है कि शिवपूजा आर्यों में अनार्यों से आयी।

रावण हो या वाणासुर या अन्य—जितने भी असुर, दानव, नाग, द्राविड़ आदि जातियों के सदस्य थे, शिव-उपासक होते थे। आर्यों-ब्राह्मणों के वंश में लगता है कन्याओं की उपज कम थी। अतएव वे अनार्यों की कन्याओं से अपनी शादी करने लगे। कुछ उदाहरण लें—पराशर ने धीवरीकन्या मत्स्यगंधा को पत्नी बनाया। उच्च ब्राह्मण विश्रवा ने राक्षस सुमाली की सुन्दरी कन्या कैकसी से, आर्यश्रेष्ठ इन्द्र ने पुलोम दानव-कन्या शची से, सूर्यवंशीय क्षत्रिय राजा ययाति ने वृषपर्वा दैत्य की कन्या शर्मिष्ठा से, वसुदेव ने असुर कंस की बहन देवकी से, भीमसेन ने हिडिम्बा नामक राक्षस कन्या से, अर्जुन ने नागकन्या उलूपी से, श्रुतश्रवा ने भी नागकन्या से, ऋषि जरत्कार ने वासुकि नाग की बहन से, ऋषि मंदपाल ने एक अनार्य कन्या से तथा महर्षि वसिष्ठ ने निम्न कहे जाने वाले कुल में उत्पन्न अक्षमाला से अपने विवाह किये (मनुस्मृति 9/2/3)। यहां तक कि जिस महान भरत के नाम से हमारे देश का नाम

भारतवर्ष पड़ा है, उनके पिता दुष्यन्त थे परन्तु उनकी माता थी मेनका अप्सरा की पुत्री शकुन्तला। शाक्यमुनि महात्मा बुद्ध की वंशपरम्परा आर्य-मंगोल मिश्रित मानी ही जाती है। दशरथ की तीसरी पत्नी सुमित्रा वर्णसंकर से उत्पन्न थीं ''सुमित्रा तु वर्णसंकरजा'' (भट्टिकाव्य की जयमंगला टीका)। यह सूची बहुत लम्बी बढ़ाई जा सकती है।

जब इस प्रकार अनार्य कन्याएं आर्यों के घर पत्नियां बनकर आयीं, तो वे अपने पितृकुल के विश्वास, पूजापाठ भी लेकर आयीं। इसीलिए आगे चलकर आर्यों के मुख्य कृत्य नित्य हवन आदि लुप्त-जैसे हो गये और पूजा-पाठ फैल गये।

विद्वानों का मत है कि इसी प्रकार अनार्य लड़कियां आर्यों में शिवपूजा लायीं। एक मनोरंजक तथा सारगर्भित उदाहरण लें—वामन पुराण के अनुसार एक बार महादेव नग्न रूप से ऋषियों के आश्रम के पास आये। ब्राह्मण ऋषियों की पत्नियां मोहित हो महादेव के चारों ओर आकर खड़ी हो गयीं। ऋषियों को यह अभद्रता अच्छी नहीं लगी। ''मुनियों ने जब देखा कि हमारे ही आश्रम की पत्नियां अभद्र रूप से महादेव पर मोहित हैं, तो वे महादेव को 'मारो-मारो' कहकर काष्ठ-पत्थर लेकर दौड़े। यथा—

क्षोभं विलोक्य मुनयः आश्रमे तु स्वयोषिताम्।
हन्यतामिति सम्भाष्य काष्ठपाषाणपाणयः॥

(वामन पुराण 43/70)

फिर तो उन ऋषियों ने महादेव के उठे हुए विभीषण (भयंकर) लिंग को काटकर गिरा दिया। यथा—

पातयन्तिस्य देवस्य लिंगमूर्ध्वं विभीषणम्।

(वामन पुराण 43/71)

इसी प्रकार कूर्म पुराण (37/22) में लिखा है कि महादेव को एक देवदारु वन में विचरते देखकर मुनि पत्नियां उन पर मोहित हो गयीं। इसे देखकर मुनियों ने शिव को कठोर वचनों में शाप दिया।

संस्कृत भाषा की पुरानी पुस्तकों में अनेक सद्गुण होते हुए एक महान दोष है कि उनमें बहुत सारी बातों को शृंगारिक (कामुक) उदाहरण से समझाने की चेष्टा की गयी है। यहां शिव पर मुनिपत्नियों का मोहित होने तथा मुनियों द्वारा शिव को शाप देने और उनका तिरस्कार करने का अर्थ यही है कि ऋषि-मुनियों की पत्नियां जो प्रायः आर्येतर परिवार से आयीं थीं, अपने पूर्व संस्कार-वश शिवलिंगी को पूजना चाहती थीं, परन्तु आर्य ऋषि-मुनि इसका घोर विरोध करते थे। अन्ततः आर्यों का पुरुषवर्ग स्त्रियों की भावना रोकने में असमर्थ रहा

और धीरे-धीरे शिवलिंग की पूजा आर्यों के घरों में व्याप्त हो गयी। सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद आर्यपुरुषों की वंशपरम्परा को याद भी नहीं रहा कि शिवलिंग या भस्ममंडित महादेव की पूजा अवैदिक तथा अनार्य है।

823. प्रश्न—गणेश तथा स्वामि कार्तिकेय के माता-पिता कौन हैं और उनकी वरीयता कब से है?

उत्तर—पार्वती ने अपने शरीर में उबटन लगाया। उस उबटन के मैल को झाड़कर इकट्ठा कर लिया और उसी को एक बालक बना दिया। वही गणेश हैं। वह दरवाजे पर थे। शिव ने समझा यह दूसरा पुरुष है, अत: गणेश का सिर काट दिया। पार्वती से भेद जानने पर एक हाथी का सिर काटकर गणेश के धड़ पर लगा दिया, इसलिए गणेश गजानन हो गये।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार गणेश श्रीकृष्ण के अवतार हैं। श्रीकृष्ण पार्वती के बिस्तर पर एक सुन्दर बच्चा बनकर लेट गये। उस बच्चे के मुख को शनिश्चर ने देख लिया, इससे मुख भस्म हो गया। तब एक हाथी का सिर बच्चे पर जोड़ा गया।

महाभारत के वनपर्व के अनुसार सप्त-ऋषियों की पत्नियों को देखकर अग्नि देवता मोहित हो गये; परन्तु वे ऋषि पत्नियां पतिव्रता थीं, अत: उनसे अग्नि महाराज छेड़खानी कर नहीं सकते थे। अग्नि की पत्नी 'स्वाहा' ने छह ऋषियों की पत्नियों के रूप धरकर छह बार अग्नि से समागम किया और उनके वीर्य को हाथ में लेकर सोने के कुण्ड में रख दिया। सातवीं अरुंधती का रूप वे नहीं बना सकीं। अत: उस कुंड से छह मुख वाले स्वामि कार्तिकेय जमीन पर तुरन्त प्रकट हो गये। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार शिव का वीर्य जमीन पर गिरा और स्वामी कार्तिकेय जमीन पर तुरंत प्रकट हो गये। वाल्मीकीय रामायण के बालकांड में भिन्न प्रकार से शिव के वीर्य गिरने से स्वामि कार्तिकेय की उत्पत्ति बतायी गयी है, जो सब की सब सृष्टिक्रम विरुद्ध होने से मिथ्या कथाएं हैं।

वस्तुत: गणेश तथा स्वामि कार्तिकेय भी किसी-न-किसी प्रकार आदि भारतवासियों के कल्पित देवता थे, जिन्हें बहुत पीछे आर्यों ने भी स्वीकारा। स्वामि कार्तिकेय का उत्तर भारत में कम महत्त्व है, दक्षिण भारत में इनकी महिमा ज्यादा है। गणेश पूरे भारत में ज्यादा व्याप्त हैं।

विद्वानों का मत है कि गणेश हाथीमुख के देवता हैं। इस प्रकार के विचित्र देवता जंगलवासी असभ्यों के आज होते हैं। जिस देश से आर्य भारत में आये, उस देश में हाथी नहीं होते थे; अत: आर्यों को हाथीमुख देवता की कल्पना ही नहीं हो सकती थी।

कहा जाता है भारत के आदिवासियों में भयंकर गजमुखधारी गणेश विघ्न उत्पन्न करने वाले देवता थे। अत: उनको खुश करने के लिए आदिवासी लोग इन्हें पूजते थे। जब इन्हें आर्यों ने स्वीकारा तब इन्हें विघ्नहरण करने वाला बना दिया और ये मंगलकारी देवता बन गये।

गणेश वैदिक देवता नहीं हैं। यजुर्वेद में जो ''गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे'' आया है, इससे पण्डितों को भ्रम होता है कि वेद में गणपति हैं। परन्तु वास्तव में यहां के गणों में गणपति अश्वमेध में छोड़ा गया घोड़ा है, गणेश नहीं। इसी प्रकार यजुर्वेद में 'महावीर' शब्द आया है और लोग उससे हनुमान की बात सोचने लगते हैं, परन्तु वहां महावीर यज्ञ में रखे हुए विशेष प्रकार के कलश का नाम है। यहां तक कि राम-कृष्ण तक वैदिक देवता नहीं हैं। हां, वेदों का प्रबल देवता इन्द्र अवश्य है, जिसे भक्त कवियों ने कुत्ता कह डाला है, और पूरा हिन्दू समाज इन्द्रपूजा से अलग हो गया है।

824. प्रश्न—रावण तथा राम में कौन बड़ा था?

उत्तर—अपने-अपने स्थान पर दोनों बड़े थे; राम के साथ रावण को भी वाल्मीकि जी ने महात्मा शब्द से याद किया है। किन्तु रावण से राम का आदर्श ऊंचा है।

* * *

825. प्रश्न—मेरी लड़की बहुत दिनों से बीमार है। बहुत पैसे खर्च कर रहे हैं और सेवा भी। उसका पूर्वजन्म का मैं कर्जदार हूं कि मेरी पत्नी?

उत्तर—जो भी हो, सेवा करना परम धर्म है।

826. प्रश्न—लोग धर्म के नाम पर लड़ते क्यों हैं?

उत्तर—क्योंकि वे अ-धर्मी हैं।

827. प्रश्न—कबीरपंथी किस दिन व्रत-उपवास करते हैं?

उत्तर—प्राय: लोग पूर्णिमा को करते हैं। पारखी लोग किसी दिन भी कर लेते हैं। व्रत का उद्देश्य केवल पेट की सफाई तथा उस दिन अधिक समय अध्ययन, मनन एवं आध्यात्मिक चिंतन है।

828. प्रश्न—मोह कहां उत्पन्न होता है?

उत्तर—कांचन, कामिनी (पुरुष के लिए स्त्री तथा स्त्री के लिए पुरुष) तथा सम्मान में। इनसे सावधान।